Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :149)

अनुवाद: हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो (अल्लाह से) सब्र और नमाज़ के साथ सहायता मांगो। निस्संदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3 | अंक 20

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक | संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 रमज़ान 1439 हिजरी कमरी 17 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 17 मई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

जिंन्दगी के ये दिन बहरहाल गुज़र ही जाते हैं और अक्सर जानवर की ज़िन्दगी की तरह ग़ुज़रते हैं लेकिन मूबारक वही दिन है जो ख़ुदा तआला की मुहब्बत और वफा में गुज़रे ।

अब्दुल लतीफ के नमूना को हमेशा सामने रखो कि उस से किस तरह सच्चों और वफादारों की निशानियां प्रकट हुई हैं। यह नमूना तुम्हारे लिए अल्लाह तआला ने पेश किया है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अब्दुल लतीफ के लिए वह दिन जो उस की संगसारी का दिन था कैसा कठिन था। वह एक मैदान में संगसारी के लिए लाया गया और बहुत से लोग इस तमाशा को देख रहे थे। परन्तु वह अपने स्थान पर कितना मान सम्मान रखता था। अगर उस का बाकी सारी जीवन एक तरफ हो और वह दिन एक तरफ तो वह दिन मान सम्मान में बढ़ जाता है। जिंन्दगी के ये दिन बहरहाल गुज़र ही जाते हैं और अक्सर जानवर की ज़िन्दगी की तरह ग़ुज़रते हैं लेकिन मुबारक वही दिन है जो ख़ुदा तआला की मुहब्बत और वफा में गुज़रे । फर्ज करो के एक शख़्स के पास लतीफ और उत्तम खाने खाने के लिए और खूबसूरत बीवियां और उम्दाह उम्दाह सवारियां सवार होने को रखता है। बहुत से नौकर हर वक्त ख़िदमत के लिए हाज़िर रहते हैं मगर इन सब बातों का अन्जाम क्या है ? क्या ये लज़्ज़तें और आराम हमेशा के लिए हैं ? हरगिज़ नहीं । इनका अन्जाम आख़िर फना है। मरदाना ज़िन्दगी यही है के इस ज़िन्दगी पर फरिशते भी तअज्जुब करें। वह ऐसे मकाम पर खड़ा हो कि इसकी इस्तकामत , इख़्लास और वफादारी आश्चर्य में डालने वाली हो। ख़ुदा तआला नामर्द को नहीं चाहता। अगर ज़मीन तथा आसमान भी ज़ाहरी आमाल से भर दें परन्तु इन कर्मों में वफा न हो तो उन की कुछ भी क़ीमत नहीं। अल्लाह की किताब से सही प्रमाणित होता है कि जब तक इंसान सादिक और वफादार नहीं होता उस समय तक उस की नमाज़ें भी जहन्नुम की तरफ ले कर जाने वाली होती हैं। जब तक पूरा वफादार और निष्ठावान न हो अंहकार की जड़ अन्दर रहती है परन्तु जब पूरा वफादार हो जाए उस समय तक वफा और सच्चाई आती है और वह ज़हरीला तत्व निफाक और बुज़दली का जो पहले पाया जाता है दूर हो जाता है।

अब समय कम है। मैं बार बार यही नसीहत करता हूं कि कोई जवान ये भरोसा न करे कि अठारह या उन्नीस साल की उम्र है और अभी बहुत समय है। तंदुरुस्ती और सेहत पर गर्व न करे। इसी तरह और कोई आदमी जो अच्छी हालत रखता है वह अपनी वजाहत पर भरोसा न रखे। ज़माना इंकलाब में है। यह अन्तिम ज़माना है अल्लाह तआला सच्चे और झूठे को आज़माना चाहता है। इस समय सच्चाई और वफादारी दिखाने का समय है और अन्तिम अवसर दिया गया है। यह समय फिर न आएगा। ये वह समय है कि सारे नबियों की भविष्यवाणियां यहां आकर समाप्त हो जाती हैं। इस लिए सच्चाई और सेवा का यह अन्तिम अवसर है जो मानवजाति को दिया गया है। अब इस के बाद कोई अवसर न होगा। बहुत ही हतभागा है वह आदमी जो इस अवसर को खोता है।

केवल ज़ुबान से बैअत कर लेना कोई चीज़ नहीं है बल्कि कोशिश करो अल्लाह तआला से दुआंए मांगो कि वह तुम्हें सच्चा बना दे। इस में सुस्ती से काम न लो बल्कि चुस्त हो जाओ। और इस शिक्षा पर जो मैं प्रस्तुत कर चुका हूं। अनुकरण करने की कोशिश करो। और उस मार्ग पर चलो जो मैंने प्रस्तुत की है। अब्दुल लतीफ के नमूना को हमेशा सामने रखो कि उस से किस तरह सच्चों और वफादारों की निशानियां प्रकट हुईं हैं। यह नमूना तुम्हारे लिए अल्लाह तआला ने पेश किया है। हमेशा मिलते रहो। ये दुनिया कुछ दिन की है। एक दिन आना है कि न हम होंगे और न तुम और न कोई और। और यह सब जंगल वीराना होगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात के बाद मदीना की क्या अवस्था हो गई। प्रत्येक की अवस्था में तब्दीली पैदा हो गई थी। अत: इस तब्दीली को सामने रखो और अन्तिम समय को हमेशा सामने रखो। आने वाली नस्लें आप लोगों का मुंह देखेंगी और इसी नमूना को देखेंगी। अगर तुम पूरे तौर पर इस तालीम का अनुकरण करने वाला न बनाओगे तो मानो तुम आने वाली नस्लें तबाह कर दोगे।

इन्सान की तबीयत में नमूना देखना है। वह नमूना से बहुत शीघ्र शिक्षा प्राप्त करता है। एक शराबी अगर कहे कि शराब न पियो और ज़ना करने वाला अगर कहे कि ज़ना न करो। एक चोर दूसरे को कहे कि चोरी न करो। तो उन की नसीहतों से दूसरे क्या लाभ उठाऐंगे।? बल्कि वे तो कहेंगे कि बड़ा ही हतभागा है वह जो ख़ुद करता है दूसरों को इस से मना करता है। जो लोग ख़ुद एक बुराई में पीड़ित हो कर उस की नसीहत करते हैं वे दूसरों को भी गुमराह करते हैं। दूसरों को नसीहत करने वाले और ख़ुद अनुकरण न करने वाले बेईमान होते हैं और अपनी घटनाओं को छोड़ देते हैं। इस प्रकार की नसीहत करने वालों से दुनिया को बहुत नुकसान पहुंचा है।

एक मौलवी का वर्णन है कि उस ने एक मस्जिद का बहाना कर के एक लाख रुपया जमा किया और एक स्थान पर वह नसीहत कर रहा था और उस की नसीहत से प्रभावित हो कर एक औरत ने अपनी पाज़ेब उतार कर उस को चन्दा में दे दी। मौलवी ने उस को कहा कि हे औरत क्या तू चाहती है कि तेरा दूसरा पैर जहन्नम में चला जाए। उस ने शीघ्र दूसरी पाज़ेब भी उतार दी। मौलवी साहिब की बीवी भी इस नसीहत में मौजूद थी। इस का उस पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। और जब मौलवी साहिब घर आए तो देखा कि उन की औरत रो रही है और उस ने अपना सारा ज़ेवर मौलवी साहिब को दे दिया कि इसे भी मस्जिद में लगा दो। मौलवी साहिब ने कहा कि तू क्यों रोती है यह तो केवल चन्दा का उपाय था और कुछ न था। अत: इस प्रकार के नमूनों से दुनिया को बहुत नुकसान हुआ है। हमारी जमाअत को इस प्रकार की बातों से परहेज़ करना चाहिए। तुम इस प्रकार न बनो। चाहिए कि तुम हर प्रकार की भावनाओं से बचो। प्रत्येक अजनबी जो तुम को मिलता है वह तुम्हारे मुंह को ताड़ता है और तुम्हारे चरित्र आदतें, दृढ़ता और अल्लाह तआला के आदेशों की पाबन्दी को देखता है कि किस प्रकार हैं। अगर अच्छे नहीं तो वे तुम्हारे माध्यम से ठोकर खाता है। अत: इन बातों को याद रखो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 516 से 518 प्रकाशन 2003 ई)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग-5)

☆ अहमदियत ही इस्लाम की वास्तविक तस्वीर है मुझे विश्वास है कि सारी दुनिया आप को स्वीकार कर लेगी और अंत आप ही विजयी होंगे । यहाँ आकर मुझे इस्लाम की वास्तविक तस्वीर देखने को मिली हर मुसलमान के लिए आवश्यक है कि वे इस्लाम का सच्चा चेहरा देखे इमाम जमाअत अहमदिया को लोगों के साथ मिलता देख कर केवल एक ही बात मस्तिष्क में आती है कि मुहब्बत सब से नफरत किसी से नहीं।

(हसन बी कुमार साहिब, कस्टम अधिकारी सिएरा लियोन)

जमाअत अहमदिया हर प्रकार के नस्ली भेदभाव से मुक्त है, मैंने पहली बार जब ख़लीफतुल मसीह को देखा तो मुझे तभी इहसास हो गया कि यह व्यक्ति वास्तव Champion of Peace है और शांति की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है मैं चाहूंगा कि बार बार इस जलसा में नियमित रूप से भाग लूं।

(साफ़ा मूनगा मो साहिब पैरामाउंट चीफ सिएरा लियोन)ॉ

मुझे जलसा सालाना में बहुत पहले सम्मिलित हो जाना चाहिए था जलसा के परिवेश में अनुशासन और नैतिकता सबसे प्रमुख नज़र आती है, हर व्यक्ति बिना किसी जातीय भेदभाव के एक दूसरे को सलाम कर रहा है, ख़लीफतुल मसीह को देख कर लगता है कि ख़ुदा तआला ने उन्हें विशेष क्षमता दी है, घंटों भाषण देने के बाद भी उनके चेहरे पर चमक देख कर हैरानी होती है।

(वारा नारा यगाला कडाला साहिब पैरामाउंट चीफ सिएरा लियोन)

अहमदियत ही इस्लाम की वास्तविक तस्वीर है, आजकल इस्लाम का नाम हर तरफ आतंकवाद के साथ संबन्धित किया जाता है लेकिन अहमदी इस धारणा को ग़लत साबित कर रहे हैं, जलसा की व्यवस्था बहुत बढ़िया थी, छोटे बच्चों को भी लोगों की सेवा के लिए नियोजित किया गया था, यह दृष्य ईमान वर्धक था, जमाअत अहमदिया की सत्यता को साबित करने के लिए यह विचार ही पर्याप्त है।

(अली कालोको साहिब सांसद सिएरा लियोन)

जमाअत कोई परेशानी पैदा नहीं करती, कोई दंगा नहीं करती, प्रेम और मुहब्बत और भाईचारा से रहते हैं और उसी की शिक्षा देते हैं, दूसरों के लिए आसानी पैदा करते हैं, मुझे लगता है कि केवल यही एक धर्म और जमाअत है जिस की ख़ुदा तआला स्वयं मदद कर रहा है, और मुझे पूरा यकीन है कि पूरी दुनिया आपको स्वीकार करेगी और अन्त में आप ही विजयी हो जाएंगे।

(Rakontondrazaka Arsena साहिब पूर्व मिनिस्टर पुलिस, मेडागास्कर)

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

(शेष रिपोर्ट पहली अगस्त 2017)

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ महमूद हाल पधारे आए जहां सिएरा लियोन से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई।

सिएरा लियोन के वफद की हुज़ूर अनवर मुलाकात सिएरा लियोन से मुलाकात

इस साल 34 लोगों प्रतिनिधिमण्डल आया था जिस में 7 सांसद नेशनल असेंबली, 11 पैरामाउंट प्रमुख, अध्यक्ष रूलिंग जमाअत, सलाहकार राष्ट्रपति, हाईकोर्ट के दो जज, पाँच पत्रकार, शिक्षा सचिव और कुछ अन्य सरकारी अधिकारियों और अन्य क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाले शामिल थे।

*राष्ट्रपति ने 8 पैरामाउंट प्रमुखों को ख़ुद खर्च पर भेजा और सिएरा लियोन से लंदन के लिए प्रतिनिधिमंडल के लंदन जाने के बारे में राष्ट्रीय टीवी पर एक ब्यान दिया और जमाअत अहमदिया को मुबारकबाद और जलसा सालाना यू.के लिए शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

* वफ्द के सदस्यों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को अपना परिचय पेश किया, सब मेहमानों ने जलसा के बारे में निवेदन किया कि जिस प्रकार हम ने जलसा में विभिन्न देशों के लोगों में एकता और समरूपता देखी है, इस का कोई उदाहरण नहीं है।

इस के बाद न्यायमूर्ति हाज्जा मूसा दमंबकरा साहिबा ने राष्ट्रपति का जलसा सालाना यू के लिए निम्नलिखित सन्देश पढ़ कर सुनाया।

सिएरा लियोन के राष्ट्रपति का संदेश

माननीय मिर्ज़ा मसरूर अहमद

इमाम अहमदिया मुस्लिम जमाअत सार्वभौमिक!

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहू!

मैं हुज़ूर अनवर और दुनिया भर में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लोगों को 51 वें जलसा सालाना यू.के के सफल आयोजन पर बधाई देता हूं। अल्लाह तआला आप के कार्यक्रमों में बरकत डाले।

हुज़ूर मैं आप को और आपकी जमाअत को बताना चाहता हूं कि मेरी सरकार और सिएरा लियोन की जनता अहमदिया मुस्लिम मिशन सिएरा लियोन की शैक्षिक, चिकित्सा और कल्याण क्षेत्र में सेवा को सम्मान की दृष्टि से देखती है। आप लोग सिएरा लियोन के विभिन्न क्षेत्रों में सौर लाइट प्रदान कर रहे हैं इसी तरह, शांति स्थापित करने के लिए आपके कदम प्रशंसा योग्य हैं

अहमदिया मिशन शांति में विश्वास रखता है और इसी उद्देश्य को पाने के लिए काम कर रहा है और उसने अपने व्यवहार से यह साबित कर दिया है कि यह शांतिप्रिय मुसलमान हैं और मेरे देश में समस्त मानव जाति के आपसी एकता के लिए काम कर रहे हैं।

मैं आपको अपनी सरकार की तरफ से सिएरा लियोन में अहमदिया मुस्लिम मिशन के निरंतर सहयोग का आश्वासन देता हूं और मैं आपके जलसा की सफलता का इच्छुक हूं। अल्लाह तआला इस देश में और सारी दुनिया में अहमदिया मुस्लिम

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मुसलमान दुनिया इस समय सब से अधिक फसादों में घिरी हुई है उन के धार्मिक और सांसारिक मार्गदर्शक उन्हें अन्धेरों में धकेल रहे हैं और आपस में एक ही देश में रहने वाले नागरिक एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं। और इस बात से बाहरी दुनिया, विशेष रूप से ग़ैर-मुस्लिम शक्तियां, मुसलमानों के समूहों को लड़ाने और अपने स्वयं के हितों को प्राप्त करने के लिए सैन्य समर्थन और जंग के हथियार भी दे रहे हैं। अतः यह एक बहुत बड़ी त्रासदी है और यह स्थिति जहां हमें अपने लिए जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है और दूसरे मुसलमानों के लिए साधारण जनता के लिए जिन्होंने स्वीकार नहीं किया उनके लिए दुआओं की तरफ ध्यान देने वाली होनी चाहिए वहां हमें इस बात की भी ज़रूरत है इस तरफ ध्यान देने की भी ज़रूरत है कि अपनी व्यावहारिक हालतों को भी इस प्रकार का बनाऐं अपनी रूहानी अवस्थाओं को भी इस प्रकार का बनाएं जैसा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें देखने चाहते हैं

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेशों का वर्णन जिन में आप ने जमाअत को अपनी अवस्थाओं को बेहतर बनाने की नसीहत फरमाई है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को स्पष्ट रूप से फरमाया है कि हमारे लिए अल्लाह की आज्ञाओं का पूर्ण पालन करना और केवल उसकी प्रसन्ता प्राप्त करना आसान काम नहीं है, लेकिन यह एक ऐसा मामला है जिसे करने की भरपूर कोशिश की जानी चाहिए। तभी अहमदी होने की हक अदा करने वाले होंगे।

अतः जैसा कि पहले कुरआन पर विचार और ध्यान देने की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हिदायत फ़रमाई थी उसी तरह आप की पुस्तकों को भी पढ़ने और धार्मिक ज्ञान बढ़ाने की तरफ हमें ध्यान देना चाहिए और इसी तरह ख़िलाफत से संबंध जोड़ने के लिए भी कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने इसके लिए जो एम.टी ए की नेअमत दी है उसके द्वारा संबन्ध करना चाहिए और समय के ख़लीफा के जो सारे प्रोग्राम हैं उनसे लाभ उठाना चाहिए जो लोग इस संबंध पर एक विशेष ध्यान स्थापित रखे हुए हैं बहुत सारे लोग हैं जो एम.टी. ए से संबन्ध रखते हैं, उनके मुझे ख़त आते हैं कि उनके ईमान तथा विश्वास में इस संबन्ध के कारण एक तरक्की हुई है अतः यह एक बड़ा माध्यम है जिस से प्रत्येक अहमदी को लाभ उठाना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने अपनी किताह "कश्ती नूह" को बार बार पढ़ने का उपदेश फरमाया है। इसके लिए इस को जहां पढ़ने और सुनाने का जमाअतों में प्रबन्ध होना चाहिए और इसी तरह, एम.टी ए में भी पढ़ने का प्रबंध होना चाहिए। प्रत्येक को इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। ख़ुद भी पढ़ना चाहिए और इसका पालन करने का प्रयास करना चाहिए।

इन दिनों में विशेष रूप से पहले भी मैंने इशारा किया है पाकिस्तान की हालत के बारे में दुआ करें और पाकिस्तानियों को ख़ुद अपने बारे में और अपने लिए बहुत दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उन्हें भी हर बुराई से सुरक्षित रखे। दोबारा मौलवियों के कारण सामान्य रूप में देश के अंदर भी जो फसाद बरपा हो गया है अल्लाह उनकी बुराई से देश को भी सुरक्षित रखे। आमतौर पर दुनिया के लिए भी दुआ करें बड़ी तेज़ी से यह अब यह युद्ध की ओर बढ़ रहे हैं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़, दिनांक 13 अप्रैल 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

इस ज़माना में हर जगह दु:ख और भ्रष्टाचार फैला हुआ है। कहीं धर्म के नाम पर फसाद है, तो कहीं विश्व की ताकतें अपनी शक्ति साबित करने के लिए फसाद कर रही हैं है। कहीं गरीबी और अमीरी के मुकाबला की कारण फसाद हो रहा है तो कहीं राजनीतिक दलों के सरकारी ताकत प्राप्त करने के लिए फसाद हो रहे हैं और कहीं घरों में छोटी छोटी बातों पर झगड़े फसाद हो रहे हैं तो कहीं एक दूसरे का हक़ अदा न करने के कारण लड़ाई झगड़े हो रहे हैं। कहीं जातीय श्रेष्ठता साबित करने के लिए फसाद के प्रयास किए जा रहे हैं, तो कहीं अपना अधिकार लेने के लिए ग़लत तरीके धारण कर के फित्ना फसाद की कोशिश की जी रही है। अत: जिस पक्ष से भी देखें दुनिया फित्ना फसाद में घिरी हई है। न ग़रीब इस से सुरक्षित है न अमीर इस से सुरक्षित है न ही विकसित देश इस से सुरक्षित हैं न कम विकसित या विकासशील देश इससे सुरक्षित हैं। मानो कि मनुष्य जो अपने आप को इस ज़माना में बहुत तरक्की वाला समझ रहा है, यह समझता है कि यह ज्ञान और अक्ल और रोशनी का ज़माना है वास्तव में अन्धेरों में डूबा हुआ है। ख़ुदा तआला को भूल कर दुनिया की तलाश और इसे ही अपना उपास्य समझ कर उसे ही अपना रब्ब समझ कर तबाही के गड़े की तरफ बढ़ रहा है। बल्कि इस के निकट पहुंच गया है। एसी अवस्था में ग़ैर मुस्लिम दुनिया का संसार की चमक दमक देख कर इस में डूबना तो कुछ सीमा तक इंसान समझ सकता है क्योंकि उन के धर्म में तो बिगाड़ पैदा हो चुका है उन को अल्लाह तआला की तरफ से मार्ग दर्शन देने के लिए उन का धर्म व्यापक और पूर्ण हल प्रस्तुत नहीं करता। परन्तु मुसलमानों पर हैरत है जिन के पास एक पूर्ण और व्यापक किताब अपनी असल अवस्था में है और फिर ख़ुदा तआला ने अपने वादा के अनुसार इस ज़माना में इमाम को भेजा है जिस ने उलमा के आपस के मतभेद के कारण कुरआन की तफसीरों में या धर्म में जो मतभेद या ग़लत रंग पैदा कर दिया गया था उस का सुधार करना था परन्तु बजाए इस के मुसलमान ख़ुदा तआला के भेजे हुए इस नबी को स्वीकार करें उस की बात सुनें और उस की बातों की तरफ आएं जो मतभेदों और मतान्तरों को समाप्त करने वाली बात है, मुसलमानों की अधिकतर धर्म के नाम पर फसाद पैदा करने वाले उलमा के पीछे चल रही है और उन के पीछे चल कर अल्लाह तआला के भेजे हुए कि बात सुनने के लिए तय्यार नहीं। अल्लाह तआला ने जो दुनिया के फसाद समाप्त करने के लिए और आपस में मुहब्बत और भाई चारा पैदा करने के लिए और ख़ुदा तआला को पहचानने के लिए एक प्रबन्ध किया था परन्तु मुसलमान इस तरफ ध्यान देने के लिए तय्यार नहीं और यही कारण है कि मुसलमान दुनिया इस समय सब से अधिक फसादों में घिरी हुई है उन के धार्मिक और सांसारिक मार्गदर्शक उन्हें अन्धेरों में धकेल रहे हैं और आपस में एक ही देश में रहने वाले नागरिक एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं और इस बात से बाहरी दुनिया, विशेष रूप से ग़ैर-मुस्लिम शक्तियां, मुसलमानों के समूहों को लड़ाने

और अपने स्वयं के हितों को प्राप्त करने के लिए सैन्य समर्थन और जंग के हथियार भी दे रही हैं। अत: यह एक बहुत बड़ी त्रासदी है और यह स्थिति जहां हमें अपने लिए जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है और दूसरे मुसलमानों के लिए साधारण जनता के लिए जिन्होंने स्वीकार नहीं किया उनके लिए दुआओं की तरफ ध्यान देने वाली होनी चाहिए। वहां हमें इस बात की भी ज़रूरत है इस तरफ ध्यान देने की भी ज़रूरत है कि अपनी व्यावहारिक हालतों को भी इस प्रकार का बनाऐं अपनी रूहानी अवस्थाओं को भी इस प्रकार का बनाएं जैसा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें देखने चाहते हैं क्योंकि अगर हमारी व्यावहारिक अवस्थाऐं इस प्रकार की नहीं हैं जैसा कि आप हमें देखना चाहते हैं तो सम्भव है कि हम भी उस गिरोह में शामिल हो जाएं जो फित्ना तथा फसाद पैदा करने वाला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निरन्तर और बार बार अपनी जमाअत के के लोगों को नसीहत फरमाई है कि कि तुम्हारी व्यवस्थाएं बैअत के बाद किस प्रकार की होनी चाहिए। इस के लिए तुम ने क्या तरीके दारण करने हैं और क्या नहीं करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण इस समय पढूंगा जो इन बातों की तरफ ध्यान दिलाते हैं इस लिए इन को ध्यान से सुनना चाहिए। यह न समझें कि पहले भी कई बार सुन चुके हैं या पढ़ चुके हैं। पढ़ कर और सुन कर भी भूल जाते हैं। जिस क्रम और जिस तरीके से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ये बातें वर्णन की हैं और रसालों में फैली हुई मज्लिस में बार बार जमाअत को अपनी हालतों को बेहतर करने की तरफ नसीहत की है ये इस बात का इज़हार है कि आप को अपनी जमाअत की कितनी फिक्र थी कि कहीं वह अपने उद्देश्य को भूल न जाएं कहीं बैअत के बाद फिर उन में बिगाड़ पैदा न हो जाए और वे अन्धेरों की तरफ बढ़ने वाले न हो जाएं।

एक स्थान पर फरमाते हैं

"हमारी जमाअत के लिए, यह आवश्यक है कि इस बिगाड़ के ज़माना में, जब चारों तरफ अज्ञानता और गुमराही की हवा चल रही हो। तक्वा धारण करें। दुनिया की अवस्था यह है कि अल्लाह तआला की आज्ञाओं का महत्त्व नहीं है, अधिकारों और नसीहतों की परवाह नहीं है।" न यह पता हैं कि हमारे क्या अधिकार हैं और हम ने उन्हें किस प्रकार अदा करना है न इन बातों की परवाह है जिस की उन को नसीहत की गई थी या उन को वसीयत की गई थी। "दुनिया और उस के कामों में इतने डूबे हुए हैं कि थोड़ा सा दुनिया का नुकसान होता देख कर धर्म के हिस्सा को छोड़ देते हैं। और अल्लाह तआला के अधिकार को नष्ट कर देते हैं जैसा कि ये सब बातें मुकदमों और शरीकों को साथ झगड़ों में देखी जाती हैं। लालच की निय्यत से एक दूसरे से व्यवहार करते हैं। नफ्सानी भावनाओ के मुकाबला में बहुत कमज़ोर हैं।" थोड़ी सी बात हुई तो नफ्सानी भावनाएं विजयी हो गए। "उस समय तक कि ख़ुदा ने उन को कमज़ोर कर रखा है गुनाह की हिम्मत नहीं करते।" अगर गुनाह नहीं कर रहे तो इसलिए कि कमज़ोर हैं डरते हैं कहीं पकड़े न जाएं और सज़ा न मिले परन्तु थोड़ी सी कमज़ोरी दूर हुई और गुनाह का अवसर मिला तो शीघ्र ही इस के करने वाले हो जाते हैं।" फरमाया कि "आज इस ज़माना में प्रत्येक स्थान पर तलाश कर लो यही पता चलेगा कि मानो सच्चा तक्वा उठ गया है और सच्चा ईमान बिल्कुल नहीं। परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला को स्वीकार है कि इन के सच्चे तक्वा और ईमान का बीज हरगिज़ नष्ट न करे जब देखता है कि अब फसल बिल्कुल तबाह होने वाली है तो नई फसल पैदा कर देता है। एक नस्ल ख़राब हो रही है, एक फसल ख़राब हो रही है, तो अन्य फसल पैदा कर देता है। यहां अभिप्राय यह है कि अगर एक नस्ल ख़राब होगी या कुछ तबाह होंगे या एक क़ौम तबाह होगी तो और क़ौमें पैदा कर देगा और पैदा करता है। फरमाया कि "वही नवीन कुरआन मजीद है जैसा कि ख़ुदा तआला ने फरमाया اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्हिज्र 10)कि हम ने ही इस ज़िक्र को उतारा है, इस कुरआन को उतारा है, हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं। फरमाया कि "बहुत सा हिस्सा हदीसों का भी मौजूद है और बरकतें भी हैं परन्तु दिलों में ईमान और व्यावहारिक हालत बिल्कुल नहीं है। ख़ुदा तआला ने मुझे इसीलिए प्रादुर्भाव किया है कि ये बातें फिर पैदा हों। ख़ुदा ने जब देखा कि मैदान ख़ाली है तो उस के इलाह होने के तकाज़ा ने हरगिज़ पसन्द न किया के यह मैदान ख़ाली रहे।" अगर बुराइयां फैल रही हैं तो अल्लाह तआला के सम्मान का तकाज़ा था, अल्लाह तआला के इलाह होने का तकाज़ा था कि इस मैदान को दोबारा ऐसे लोगों से भरे या ऐसे लोग पैदा करे जो फिर से धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाल हों। धर्म को आरम्भ करने वाले हों धर्म को फैलाने वाले हों। आप फरमाते हैं "हरगिज़ पसन्द न किया कि यह मैदान ख़ाली रहे और लोग इसी प्रकार दूर रहें। इस लिए अब उन के मुकाबला में ख़ुदा तआला एक नई क़ौम को पैदा करना चाहता है और इसीलिए हमारी तब्लीग़ है कि तक्वा की ज़िन्दगी प्राप्त हो जाए।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 395-396 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू.के)

अत: अगर सहीह बैअत की है तो अहमदी को ज़िन्दों में शामिल होना होगा। रूहानी ज़िन्दों में शामिल होना होगा वरना कोई लाभ नहीं। क्या यह नई क़ौम, केवल मुंह से कह देने से कि हम नई क़ौम बन जाऐंगे। नहीं। बल्कि इस का लिए व्यावहारिक हालतों की तब्दीली और सच्चा तक्वा पैदा करने की ज़रूरत है तभीहम वह नई क़ौम बन सकते हैं जो इस्लाम की वास्तविकता को समझने वाली है। तभी हम वे लोग बन सकते हैं जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाले हैं। तभी हम अपने बैअत के वादा को पूरा कर सकते हैं।

इस्लाम की वास्तविकता क्या है और इसे हम किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इस्लाम अल्लाह तआला के सारे आदेशों के नीचे आ जाने की नाम है और इस का सारांक्ष ख़ुदा की सच्ची और पूर्ण आज्ञापालन है। मुसलमान वह है जो अपनी सारी हस्ती ख़ुदा तआला के सामने बिना किसी आशा और बदला के रख दे।"(बिना किसी उम्मीद के बिना किसी पुरस्कार कि अल्लाह तआला को प्राप्त करना चाहता है।)" مَنۡ اَسۡلَمَ وَجۡہَہٗ لِلّٰہِ وَ ہُوَ مُحۡسِنٌ (सूरह अल्बकरह: 113) अर्थात मुसलमान वह है जो अपने सारे वुजूद को अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उस के सामने वक्फ कर दे और उस को समर्पित कर दे और आस्था और व्यावहारिक रूप से उस का लक्ष्य और उद्देश्य अल्लाह तआला की ही प्रसन्नता और ख़ुशी है और सारी नेकियां और अच्छे कर्म जो उस से हों वह कठिनाई और परेशानी के मार्ग से न हों बल्कि उन में एक आन्नद और मज़ा हो।" अगर को नेकियां करनी हैं, अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण कर रहे हैं तो इसलिए नहीं कि हमारे पर यह बोझ पड़ गया है बल्कि प्रत्येक नेक काम करने में इंसान को एक आन्नद और मज़ा आना चाहिए। प्रसन्नचित करना चाहिए। फरमाया कि" जो प्रत्येक प्रकार के कष्ट को आराम से बदल दे।" फरमाते हैं" वास्तविक मुसलमान अल्लाह तआला से प्यार करता है यह कह कर और स्वीकार कर के मेरा महबूब और मौला मेरा पैदा करने वाला और उपकारक है इसलिए इस के आस्ताना पर सिर रख देता है। सच्चे मुसलमान को अगर कहा जाए कि इन कर्मों के बदला में कुछ भी न मिलेगा और न जन्नत है और जहन्नम और न आराम हैं, न आन्नद हैं तो वह अपने नेक कर्मों और इलाही मुहब्बत का हरगिज़ हरगिज़ नहीं छोड़ सकता।" यह है अल्लाह तआला से बेनफ्स मुहब्बत जो आप पैदा करना चाहते हैं कि किसी बदला के लिए नहीं, जहन्नम के डर से नहीं, जन्नत को प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि अल्लाह तआला की विशुद्ध मुहब्बत होनी चाहिए। चाहे कुछ भी न मिले अल्लाह तआला से विशुद्ध मुहब्बत हो। " क्योंकि उस की इबादत और अल्लाह तआला से सम्बन्ध और उस का आज्ञापालन और इताअत में फना किसी बदला और इनाम के कारण नहीं है बल्कि वह अपने वुजूद को इस प्रकार की चीज़ समझता है कि वह वास्तव में ख़ुदा तआला की पहचान, उस की मुहब्बत और इताअत के लिए बनाया गया है और कोई उद्देश्य और लक्ष्य उस का है ही नहीं। इसलिए जब वह अपनी ख़ुदा तआला द्वारा प्रदत ताकतों को जब इन लक्ष्यों और उद्देश्यों पर खर्च करता है तो उस का अपने सच्चे महबूब का ही चेहरा नज़र आता है" जब बे नफ्स होकर अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा करोगे तो फिर अल्लाह तआला की चेहरा नज़र आएगा। फिर सहीह सम्बन्ध पैदा होता है।" जन्नत दोज़ख़ पर उस की नज़र नहीं होती।" बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता पर होती है।

अल्लाह तआला के इश्क़ में अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं कि

" मैं कहता हूं कि अगर मुझे इस बात का विश्वास दिला दिया जाए कि ख़ुदा तआला से मुहब्बत करने और उस की इताअत करने में कठोर से कठोर सज़ा दी जाएगी तो मैं कसम खा कर कहता हूं कि मेरी तबीयत इस प्रकार की है कि वह इन कष्टों और मुसीबतों को एक आन्नद और मुहब्बत को जोश और शौक़ के साथ सहन करने का तैय्यार है और बावजूद इस विश्वास के जो अज़ाब और दुख: की सूरत में दिलाया जाए कभी ख़ुदा की इताअत और आज्ञापालन से एक कदम बाहर निकलने को हज़ार बल्कि असंख्य मौत से बढ़ कर दुखों और मुसीबतों का सार ठहराती है.......।" फरमाया कि एक सच्चा मुसलमान ख़ुदा के आदेश से बाहर होने अपने लिए हलाकत का कारण समझता है चाहे उस को इस नाफरमानी में कितनी ही सुविधा और आराम का वादा दिया जाए।" फरमाते हैं "अत: वास्तविक मुसलमान

होने के लिए ज़रूरी है कि इस प्रकार की फितरत प्राप्त की जाए कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत और आज्ञा पालन किसी बदला और सज़ा के भय के कारण और आशा पर न हो बल्कि फितरत का गुण होकर फिर वह मुहब्बत की जाए ख़ुदा उस के लिए एक जन्नत पैदा कर देती है और वास्तविक जन्नत यही है। कोई आदमी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वह इस मार्ग को धारण नहीं करता है इस लिए मैं तुम को जो मेरे साथ संबन्ध रखते हो इसी मार्ग से दाख़िल होने की शिक्षा देता हूं क्योंकि जन्नत का वास्तविक मार्ग यही है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 181 से 183 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू.के)

अत: हमारे लिए अल्लाह तआला से संबन्ध और मुहब्बत के बारे में यह आशा और अभिलाषा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से रखते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को स्पष्ट फरमाया है कि अल्लाह तआला के आदेशों का पूर्ण पालन करना और केवल उस के प्रसन्नता को प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। परन्तु यह इस प्रकार की बात है जिस के लिए पूर्ण रूप से कोशिश करनी चाहिए। तभी अहमदी होने का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अत: आप ने ख़ुद ही यह प्रश्न उठाया कि क्या इताअत एक सरल बात है? फिर फरमाते हैं

" जो आदमी पूर्ण रूप से इताअत नहीं करता वह इस सिलसिला को बदनाम करता है। आदेश एक नहीं होता बल्कि आदेश तो बहुत सारे होते हैं। जिस प्रकार जन्नत के कई दरवाज़ें हैं कोई किसी से दाख़िल होता है कोई किसी से दाख़िल होता है। इसी प्रकार दोज़ख कई दरवाज़े हैं एसा न हो कि तुम एक दरवाज़ा तो दोज़ख का बन्द कर दो और दूसरा खुला रखो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 74 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर आप फरमाते हैं कि " याद रखो कि केवल नाम लिखाने से कोई जमाअतमें शामिल नहीं हो जाता" केवल नाम लिखवाने से कोई जमाअत में शामिल नहीं होता। " जब तक वह हकीकत को अपने अन्दर न सोख ले।" फरमाया आपस में मुहब्बत करो एक दूसरे के अधिकार न मारो।" और ख़ुदा के मार्ग में दीवाना की तरह हो जाओ ताकि ख़ुदा तुम पर फज़्ल करे। इस से कुछ बाहर नहीं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 75 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

आप ने स्पष्ट रूप से फरमाया कि ख़ुदा तआला के फज़्ल को प्राप्त करने के लिए पूर्ण ईमान लाना और अनुकरण करना ज़रूरी है। आप फरमाते हैं कि इस का व्यावहारिक उदाहरण इस प्रकार है कि जैसे जीभ से केवल मीठा या मिस्री कह देने से मुंह मीठा नहीं हो जाता जब तक मीठा न खाया जाए। इसी प्रकार अल्लाह तआला की तौहीद और मुहब्बत का मौखित इकरार करना कोई लाभ नहीं देगा जब तक व्यावहारिक हिस्सा न हो और व्यावहारिक हिस्सा उसी समय प्रमाणित होगा जब दुनिया को प्राथमिकता देने का बोझ उतार कर धर्म को प्राथमिकता दोगे। अगर ख़ुदा को खुश करना है तो धर्म को प्राथमिकता दो। धर्म तुम्हारी प्राथमिकता होनी चाहिए। आप ने सचेत किया कि अगर तुम्हारे अन्दर वफादारी और श्रद्धा नहीं है तो तुम झूठे हो और इस अवस्था में दुश्मन से पहले वह हलाक होगा जिस में वफादारी नहीं है। फरमाया कि ख़ुदा तआला धोखा नहीं खा सकता। उस को धोखा नहीं दिया जा सकता। और न कोई उस को धोखा दे सकता है इस लिए ज़रूरी है कि तुम सच्ची श्रद्धा और सच्चाई पैदा करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 188 से 190 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने की और अधिक व्याख्या करते हुए कि किस प्रकार तुम यह प्राप्त कर सकते हो और सहाबा ने किस प्रकार इस प्राथमिकता दी और तुम्हें किस प्रकार इस की कोशिश करनी चाहिए। आप फरमाते हैं कि

" देखो दो प्रकार के लोग होते हैं एक तो वे जो इस्लाम स्वीकार कर के दुनिया के कारोबार और व्यापारों में लग जाते हैं। शैतान इन के सिर पर सवार हो जाता है।" फरमाया" मेरा यह अर्थ नहीं कि व्यापार करना मना है।"(या संसारिक काम करना मना है।)"सहाबा व्यापार भी करते थे वह धर्म को संसार पर प्राथमिकता देते थे। उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो इस्लाम के बारे में सच्चा ज्ञान जो विश्वास से उन के दिलों को भर दे उन्होंने प्राप्त किया। यही कारण था कि वे किसी मैदान में शैतान के हमले से डगमडाए नहीं।" शैतान उन पर हमला नहीं कर सका शैतान उन पर काबू नहीं पा सका। सांसारिक काम भी करते थे परन्तु अल्लाह तआला हमेशा याद रहता था।""कोई बात उन्हें सच्चाई के प्रकट करने से नहीं रोक सकी।" आप ने फरमाया कि मेरा अर्थ इस से केवल इतना है कि जो केवल दुनिया के हा बन्दे और ग़ुलाम हो जाते हैं मानो दुनिया की इबादत करने वाले होते हैं और इस प्रकार के लोगों पर शैतान अपना कब्ज़ा शीघ्र कर लेता है। दूसरे वे लोग होते हैं जो धर्म की तरक्की में मार्ग पर होते हैं। ये वह गिरोह है जो हिज़बुल्लाह कहलाता है और शैतान और उस के लश्कर पर विजयी पाता है। माल चूंकि व्यापार से बढ़ता है इसलिए ख़ुदा तआला ने भी धर्म की चाह और धर्म की उन्नति को अक व्यापार ही करार दिया है अत: फरमाता है هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ कि क्या मैं तुम्हें एक इस प्रकार का व्यापार न बताऊं जो कष्टदायक अज़ाब से मुक्ति देगी फरमाया" सब से अच्छा व्यापार धर्म का व्यापार है जो कष्टदायक अज़ाब से मुक्ति देता है। अत: मैं भी ख़ुदा तआला के इन शब्दों में तुम को कहता हूं कि هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ " फरमाया " मैं अधिक आशा उन से करता हूं जो धार्मिक तरक्की और शौक को कम नहीं करते हैं। मुझे आशा होती है कि शैतान उन प काबू न पा ले।" अर्थात जिन में स्थायित्व नहीं होता तो फिर धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता नहीं दे सकते। फिर सुस्तियां शुरू हो जाती हैं और फिर धीरे धीरे इंसान शैतान के कब्ज़ा में आ चला जाता है फरमाया कि "इसलिए कभी सुस्त नहीं होना चाहिए। प्रत्येक बात को जो समझ न आए पूछना चाहिए ताकि ज्ञान में वृद्धि हो। पूछना हराम नहीं है। इंकार के रूप में भी पूछना चाहिए।" अगर कोई किसी बात को नहीं मानता, ग़ैर हैं तो उन को तब्लीग़ करनी चाहिए। इंसाफ की मांग है कि वह भी पूछें "और व्यावहारिक तरक्की के लिए भी" एक मोमिन जो है अगर उस को व्यावहारिक तरक्की करनी है तो ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और सवाल पूछना चाहिए फरमाया कि "जो ज्ञान में तरक्की करना चाहता है उस को चाहिए कि कुरआन शरीफ को ध्यान पूर्वक पढ़े। जहां समझ में न आए पूछे। अगर कुछ बातें समझ में न आएं तो पूछ कर लाभ पहुंचाए।" फरमाया कि" कुरआन शरीफ एक धार्मिक समुन्दर है जिस में बहुत कीमती मोती मौजीद हैं।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 193-194 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

एक अवसर पर जमाअत को तक्वा का महत्त्व की तरफ ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

" हमें जिस बात की तरफ मामूर किया गया है वह यही है" अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जिस बात की तरफ मामूर किया गया है वह यही है " कि तक्वा का मैदान ख़ाली पड़ा है। तक्वा होना चाहिए। न कि यह तलवार उठाओ" तलवारें नहीं उठानी लोगों के सिर नहीं उड़ाने। जिस तरह आजकल कुछ संगठन या आतंकवादी गिरोह इस्लाम के नाम पर कर रहे हैं बल्कि धर्म को फैलाना है धर्म का प्रचार करना है प्रशिक्षण करना है तो तक्वा पहले अपने अंदर पैदा करो तक्वा होगा तो सारे काम भी धीरे धीरे शुरू हो जाएंगे। फरमाया तलवार नहीं उठानी। " यह हराम है अगर तुम तक्वा करने वाले होगे तो सारी दुनिया तुम्हारी होगी अत तक्वा पैदा करो। जो लोग शराब पीते हैं या जिन के धर्म का हिस्सा शराब पीना है उन को तक्वा से कोई संबन्ध नहीं। वे लोग नेकी से जंग कर रहे हैं। अत: अगर अल्लाह तआला हमारी जमाअत को इस प्रकार की ख़ुश किस्मत दे और उन्हें शक्ति दे कि वे बुराइयों से जंग करने वाले हों और तक्वा और नेकी के मैदान में तरक्की करें यही बड़ा सफलता है इस से बड़ कर कोई कामयाबी नहीं हो सकती।" तलवार से जंग मत करो। पहले तक्वा पैदा करने के लिए अपने आप से जंग करनी है फिर दूसरों को भी इंसान सन्देश पंहुचा सकता है इस से लोग फिर नाराज़ नहीं होंगे। फरमाया कि " इस समय सारे संसार के धर्मों को देख लो वास्तविक उद्देश्य तक्वा ग़ायब है। और दुनिया के सम्मान को ख़ुदा बनाया गया है। सच्चा ख़ुदा छुप गया है और सच्चे ख़ुदा का अपमान किया जाता है मगर अब ख़ुदा तआला चाहता है कि वह अपने आप माना जाए और दुनिया को उस की पहचान हो। जो लोग दुनिया को ख़ुदा समझते हैं वह अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले नहीं हो सकते।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 357-358 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: सभी को अपनी समीक्षा करने की आवश्यकता है कि क्या सांसारिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की तरफ तो हमारा ध्यान नहीं है। अगर ख़ुदा तआला का हक अदा करना है तो फिर धर्म को प्राथमिकता देनी होगी और सांसारिक उद्देश्यों को पीछे डालना होगा। अत: यह हम ने देखना है कि क्या हम धर्म को पीछे डाल रहे हैं या दुनिया हमारे धर्म पर विजयी है। तक्वा में हम बढ़ रहे हैं या तक्वा में हमारी कमी हो रही है।

अपनी रूहानियत बढ़ाने और अल्लाह तआला से संबन्ध पैदा करने के साथ अपने धार्मिक ज्ञान को भी अधिक बढ़ाने की तरफ ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर आप हमें नसीहत करते हुए फरमाते हैं कि

" मुर्शिद और मुरीद का सम्बन्ध उस्ताद और शागिर्द के उदाहरण से समझ लेना चाहिए। जैसे शागिर्द उस्ताद से लाभ उठाता है उसी तरह मुरीद अपने मुर्शिद से।

परन्तु शागिर्द अगर अपने उस्ताद से सम्बन्ध तो रखे परन्तु शिक्षा में कदम आगे न बढ़ाए तो लाभ नहीं उठा सकता। यही अवस्था मुरीद की है।" उस्ताद से या अपने टीचर से एक छात्र केवल सन्बंध रखता है, उस से परिचित है परन्तु ज्ञान प्राप्त नहीं कर रहा या उस की बातों पर अनुकरण नहीं कर रहा तो लाभ नहीं उठा सकता। इसी प्रकार आप ने फरमाया कि मुरीद और मुर्शिद के सम्बन्ध में केवल यह कह देना कि मेरा उस से सम्बन्ध है लाभ नहीं उठा सकता जब तक इन बातों पर अनुकरण नहीं करोगे जो तुम्हें कही जाती हैं। आप ने फरमाया" अत: इस सिलसिला में सम्बन्ध पैदा कर के अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहिए। सच्चाई को चाहने वाले को एक स्थान पर पहुंच कर ठहरना नहीं चाहिए वरना धुतकारा हुआ शैतान दूसरी तरफ लगा देगा और जैसा बन्द पानी में बदबू पैदा हो जाती है(पानी कुछ समय खड़ा रहे तो उस में बदबू पैदा हो जाती है) " इसी तरह मोमिन अगर अनी तरक्कियों को लिए कोशिश न करे तो गिर जाता है।" अगर सही मोमिन हो तो तरक्कयों की तरफ कदम बढ़ना चाहिए। एक स्थान पर खड़े रहे तो फिर खड़े नहीं रहोगे बल्कि गिर जाओगे और नीचे चले जाओगे। फरमाया" अत: नेक के काम है कि वह धर्म की तलाश में लगा रहे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़ कर कोई इंसान कामिल दुनिया में नहीं गुज़रा। परन्तु आप को भी रब्बे ज़िदनी इलमा की दुआ शिक्षा दी गई थी। फिर कौन है जो अपनी मअरफत और ज्ञान पर कामिल भरोसा कर के ठहर जाए और भविष्य में तरक्की की ज़रूरत न समझे। जैसे जैसे इंसान अपने ज्ञान और मअरफत में तरक्की करेगा उसे मालूम होगा के अभी बहुत सी बातें जानने वाली बाकी हैं। कुछ बातों को वह आरंम्भिक अवस्था में उस बच्चे की तरह जो हिसाब के सवालों को केवल व्यर्थ बातें समझता है बिल्कुल व्यर्थ समझते थे। परन्तु अन्त में वही बातें सच्चाई के उन को नज़र आ गईं। इसलिए ज़रूरी है कि अपनी अवस्था को बदले के साथ ही ज्ञान को बढ़ाने के लिए प्रत्येक बात को पूर्ण किया जाए। तुम ने बहुत से व्यर्थ बातों को छोड़ कर इस सिलसिला को स्वीकार किया है। अगर तुम इस के बारे में पूरा ज्ञान और पहचान प्राप्त नहीं करोगे तो इस से तुम्हें क्या प्राप्त हुआ।" यह कोई लाभ नहीं है कि हम ने बैअत कर ली अहमदी हो गए या हम जन्मजात अहमदी हैं । जब तक स्वंय ज्ञान प्राप्त नहीं करोगे, अपने ज्ञान को नहीं बढ़ाओगे, न जन्मजात अहमदी होना कोई लाभ देगा, न ख़ुद बैअत करना कोई लाभ देगा। फरमाया कि" तुम्हारे विश्वास और आस्था में ताकत किस प्रकार पैदा होगी।" अगर ज्ञान न बढ़ाया। थोड़ी थोड़ी सी बात पर शक तथा शंका पैदा होगी और अन्त में कदम के डगमगाए जाने का भय है।"

(मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 193 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: जैसा कि पहले क़ुरआन पर विचार और ध्यान देने की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हिदायत फ़रमाई थी उसी तरह आप की पुस्तकों को भी पढ़ने और धार्मिक ज्ञान बढ़ाने की तरफ हमें ध्यान देना चाहिए और इसी तरह ख़िलाफत से संबंध जोड़ने के लिए भी कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने इसके लिए जो एम.टी ए की नेअमत दी है उसके द्वारा संबन्ध करना चाहिए और समय के ख़लीफा के जो सारे प्रोग्राम हैं उनसे लाभ उठाना चाहिए जो लोग इस संबंध पर एक विशेष ध्यान स्थापित रखे हुए हैं बहुत सारे लोग हैं जो एम.टी. ए से संबन्ध रखते हैं, उनके मुझे ख़त आते हैं कि उनके ईमान तथा विश्वास में इस संबन्ध के कारण एक तरक्की हुई है अत: यह एक बड़ा माध्यम है जिस से प्रत्येक अहमदी को लाभ उठाना चाहिए।

एक-दूसरे के मुहब्बत और प्रेम और एक-दूसरे के कष्ट को समझने और एक-दूसरे को अधिकार देने की तरफ ध्यान देते हुए, आप फरमाते हैं कि

"तथ्य यह है कि भीतरी तौर से सारी जमाअत एक स्थान पर नहीं होता" यह नहीं हो सकता कि सारे बराबर हों।" क्या सारे गेहूं के बीज एक समान ही निकलते हैं? हम धरती पर बीज डालते हैं तो सारे बीज तो नहीं निकलते" बहुत सारे दाने इस प्रकार के होने हैं कि नष्ट हो जाते हैं और कुछ इस प्रकार के होते हैं कि चिड़ियां उन को खा जाती हैं कुछ किसी और कारण से फलदार नहीं होते।" उन को फल नहीं लगता।" अत: उन में से जो मज़बूत होते हैं"(जो अच्छे होते हैं उगने का लक्षण उन में होता है)" उन को कोई नष्ट नहीं कर सकता। ख़ुदा तआला के लिए जो जमाअत तय्यार होती है वह खेती की तरह होती है इस लिए इस नियम पर उस की तरक्की ज़रूरी है।" कोई धर्म के ज्ञान में अधिक है कोई कमज़ोर है। कोई किसी दृष्टि से बेहतर है किसी में कोई नेकी है और अपने अपने गुणों के अनुसार वह पनपनते हैं। जो कमज़ोर हैं उन को भी साथ लेकर चलना उन का काम है जो बेहतर हैं। फरमाया कि " अत: यह नियम होना चाहिए कि कमज़ोर भाइयों की मदद की जाए और उन को ताकत दी जाए। यह कुछ अनुचित बात है कि दो भाई हैं एक तैरना जानता है और दूसरा नहीं। तो क्या पहले का यह कर्तव्य नहीं होना चाहिए कि वह दूसरे को डूबने से बचाए या उस को डूबने दे? उस का कर्तव्य है कि उस का डूबने से बचाए। इसी कारण से कुरआन शरीफ में आया है कि تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى कि नेकी और तक्वा में एक दूसरे के साथ सहयोग करो। फरमाया कि " कमज़ोर भाइयों का बोझ उठाओ। व्यावहारिक ईमानी और माली कमज़ोरियों में भी शरीक हो जाओ" व्यावहारिक कमज़ोरियां हैं तो उन में भी शामिल हो जाओ किस प्रकार हो जाओ कि उन की व्यावहारिक कमज़ारियों को धारण कर लो? नहीं उन को दूर करने की कोशिश करो। ईमान में अगर उन की कमज़ोरियां हैं और तुम्हारा ईमान मज़बूत है तो उन के ईमान को बचाने की कोशिश करो। माली कमज़ोरियां हैं तो उन की माली मदद अगर कर सकते हो तो मदद करो। नहीं जो जमाअत के निज़ाम को बताओ जिस सीमा तक जमाअत कर सकती है मदद करे। फरमाया कि" शारीरिक कमज़ोरियों का भी इलाज करो।" सेहत का अवस्था ही नहीं ज़ाहिर में बीमारियां हैं इन का इलाज करो। फरमाया " कोई जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जब तक कमज़ोरों को ताकत वाले सहारा नहीं देते और इस की यही अवस्था है कि इस की पर्दा पोशी की जाए।" एक दूसरे की बुराइयां बताने के स्थान पर उन की पर्दा पोशी की जाए।" सहाबा को यही शिक्षा हुई कि नए मुसलमानों को अवस्था को देख कर चिड़ा न करो। क्योंकि तुम भी इसी प्रकार कमज़ोर थे। इसी प्रकार यह भी ज़रूरी है कि बड़ा छोटे सी सेवा करे और मुहब्बत और नर्मी के साथ बर्ताव करे। देखो वह जमाअत, जमाअत नहीं हो सकती जो एक दूसरे को खाए और जब चार मिल कर बैठें तो एक ग़रीब भाई की शिकायत करें।" कोई एक दूसरे को खा तो नहीं सकता यहां खाने से यही अभिप्राय है कि अल्लाह तआला ने कहा है कि तुम चुग़लियां करते हो बुरी धारणा करते हो तो उसी तरह है जैसे अपने मृत भाई का गोश्त खाते हैं। अत: बुराइयां न देखो प्रत्येक की अच्छाइयां देखो। फरमाया कि "वह जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जो एक दूसरे को खाए और जब चार मिल कर बैठें तो एक अपने गरीब भाई की शिकायत करनी शुरू करें" (उस के दोष वर्णन करने शुरू कर दिए)"और दोष निकालते हैं और निर्बलों और ग़रीबों का तिरस्कार करें और उन्हें घृणा और नफरत से देखें। इस तरह हरगिज़ नही होना चाहिए बल्कि एकता में शक्ति आनी चाहिए और एकता अधिक पैदा हो जाए जिस से मुहब्बत आती है और बरकतें पैदा होती है। मैं देखता हूं कि थोड़ी थोड़ी सी बात पर लोगों में मतभेद पैदा हो जाते हैं जिस के कारण यह होता है कि विरोधी लोग जो हमारी थोड़ी थोड़ी बात पर नज़र रखते हैं मामूली बातों को अख़बारों में बड़ा कर के पेश करते हैं।" आप ने फरमाया "और लोगों को" (इस कारण से फिर) "गुमराह करते हैं।" लोगों को बताते हैं कि देखो इन में यह यह बुराईयां हैं और आम लोग अनुसंधान तो करते नहीं तो भटक जाते हैं फरमाया "लेकिन अगर आंतरिक कमज़ोरियां न हों तो क्यों किसी को साहस हो कि इस तरह के लेख प्रकाशित करे और ऐसी ख़बरों के प्रकाशन से लोगों को धोखा दे। क्यों नहीं किया जाता कि नैतिक शक्तियों को विस्तारित किया जाए और यह तब होता है जब सहानुभूति, मुहब्बत और स्नेह को आम किया जाए और सभी आदतों पर रहम और छुपाने को प्राथमिकता दी जाए।" कि एक का कुसूर देख कर उस की बुराई को छुपाना चाहिए न कि उस के दोषों को प्रकट किया जाए उस की कमज़ोरियों को बाहर निकाला जाए। आजकल यह अजीब बुराई रिवाज़ पा गई है। अब लोग पति पत्नी भी एक दूसरे की कमज़ोरियों प्रकट करने लग गए हैं और इस के लिए रिकार्डिंग करनी शुरु कर देते हैं। फरमाया कि "थोड़ी थोड़ी सी बात पर इस प्रकार की कठोर गिरफतें नहीं होनी चाहिए जो दिल दुखाने और कष्ट का कारण होती हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 347 से 348 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर भाईचारा और सहानुभूति की नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि

"हमारी जमाअत को हरियाली नहीं आएगी, जब तक कि वे एक दूसरे के साथ सच्ची सहानुभूति न करें।" यदि फलना फूलना है तो फिर आपस में सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। "जिसे पूरी शक्ति दी गई है वह कमज़ोर से मुहब्बत करे है।" जिस को शक्ति दी गई है, वे कमज़ोर से मुहब्बत करे। फरमाते हैं "मैं जो यह सुनता हूँ कि कोई किसी की भूल को देखता है तो वह उससे नैतिकता से व्यवहार नहीं करता बल्कि नफरत और घृणा से व्यवहार करता है, हालांकि चाहिए तो यह कि इसके लिए दुआ करे। मुहब्बत करे और उसे नैतिकता से समझाए, लेकिन इस के स्थान पर द्वेष में बढ़ जाता है। अगर क्षमा न किया जाए, सहानुभूति न की जाए, इस तरह से बिगड़ते बिगड़ते अंजाम बुरा हो जाता है।" फरमाया कि "ख़ुदा तआला को ये

(हरकतें) स्वीकार नहीं है। जमाअत तब बनती है जब कुछ लोग कुछ से सहानुभूति कर के पर्दा पोशी करें। जब यह स्थिति उत्पन्न हो तो तब एक वुजूद हो कर एक दूसरे के अंग हो जाते हैं और अपने आप को वास्तविक भाई से बढ़ कर समझते हैं। एक आदमी का कोई बेटा हो और उस के कोई ग़लती हो जाए तो उस को छुपाया जाता है उस को अलग समझाया जाता है।..... कभी नहीं चाहता कि उस के लिए विज्ञापन दे।" अपने बेटे की कोई बुराई देखता है तो दुनिया में उसे नहीं फैलाता। निकट सम्बंध वाला भी हो तो उस की बुराइयों को छुपाता है उस को फैलाया नहीं जाता। फरमाया कि "फिर जब ख़ुदा तआला भाई बनाता, तो क्या भाइयों के अधिकार यही हैं?" यहां भाई से अभिप्राय प्रत्येक क़रीबी रिश्तेदार है। "दुनिया के भाई भाईचारे का तरीका नहीं छोड़ते।" अपने रिश्तेदारों का उदाहरण दिया है। फरमाया कि "मैं मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन आदि को देखता हूँ।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रिश्तेदार थे। मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन आदि जो आप के प्रतिद्वंद्वी भी थे और धर्म से भी हटे हुए थे "कि उनका बुराई का जीवन है, लेकिन जब कोई मामला होता है, तो तीनों एक साथ इकट्ठे हो जाते हैं। फकीरी भी अलग रह जाती है।" फरमाया कि "कभी-कभी इंसान पशु बंदर या कुत्तों से भी सीख लेता है। यह तरीका अनुचित है कि आंन्तरिक फूट हो। अल्लाह तआला ने सहाबा को भी यही नेअमत को याद दिलाया है। अगर वे सोने के पहाड़ भी खर्च करते तो वे नेअमत उन को न मिलती जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से उन को प्राप्त हुई। इसी तरह से ख़ुदा तआला ने यह सिलसिला स्थापित किया है और इसी प्रकार का भाईचारा वह यहां भी स्थापित करेगा।" फरमाया कि "ख़ुदा तआला पर मुझ को बहुत अधिक उम्मीदें हैं उस ने वादा किया है جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (आले इम्रान 56) अर्थात उन लोगों को जिन्होंने तेरा अनुकरण किया है उन लोगों पर जिन्होंने इंकार किया है क़यामत के दिन तक विजयी रखूंगा, प्राथमिकता देने वाला हूं। फरमाया कि "मैं नि:सन्देह जानता हूं कि वह एक जमाअत स्थापित करेगा जो क़यामत तक इंकार करने वालों पर विजयी होगी परन्तु यह दिन परीक्षा के दिन हैं और कमज़ोरी के दिन हैं।" उन दिनों में कमज़ोरी के दिन थे। आजकल फिर विशेष रूप से पाकिस्तान में अहमदियों को इस पर नज़र रखनी चाहिए कि ये जो उन के हालात हैं कमज़ोरी के हालात हैं और हुकूमत भी और कानूनी संस्थाएं भी और प्रशासन भी उन के विरुद्ध पहले से बढ़ कर हरकतें कर रहे हैं। इन दिनों में विशेष रूप से अपनी हालतों में परिवर्तन पैदा करने की कोशिश करें। फरमाया कि "कमज़ोरी कि दिन प्रत्येक को अवसर देते हैं ही वे अपना सुधार करे देखो एक दूसरे की शिकायत करना दिल दुखाना और कठोर बात कर के दूसरे के दिल को सदमा पहुंचाना और कमज़ोरों को तुच्छ समझना गुनाह है। अब तुम में से एक नई बिरादरी और नया भाईचारा स्थापित हुआ है। पिछले सिलसिले कट गए हैं ख़ुदा तआला ने यह नई क़ौम बनाई है जिस में अमीर गरीब बच्चे जवान बूढ़े सभी प्रकार के लोग शामिल हैं। अत: गरीबों का कर्तव्य है कि वे अपने सम्मानित भाइयों का मान और सम्मान करें और अमीरों का कर्तव्य है कि वे ग़रीबों की सहायता करें। उन्हें कमज़ोर और तुच्छ न समझें क्योंकि वे भी भाई हैं, भले ही पिता अलग हों। लेकिन आख़िर में तुम सब का रूहानी पिता एक ही है और वे एक ही पेड़ की शाखाएं हैं।

(मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 348 से 349 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

आप ने हमारे सुधार के लिए अपनी किताब "कश्ती नूह" पढ़ने की नसीहत फरमाई और इस के बार बार पढ़ने की नसीहत फरमाई। अत: आप फरमाते हैं कि

"मैंने बार बार अपनी जमाअत से कहा है कि तुम मेरी बैअत पर ही भरोसा न करना इस की वास्तविकता तक जब तक न पहुंचों तब तक मुक्ति संभव नहीं है। छिलके पर धैर्य करने वाला मग़ज़ से वंचित रह जाता है।" केवल बाहरी तक्वा को देखना काफी नहीं है जब तक कि इस के अन्दर जो चीज़ है उस को प्राप्त करने की कोशिश न करो। फरमाया कि "अगर मुरीद ख़ुद अनुकरण करने वाला नहीं तो पीर की बुज़ुर्गी उसे कोई लाभ नहीं दे सकती। जब कोई वैद्य किसी को कोई नुस्ख़ा दे और वह नुस्ख़ा लेकर रख दे तो उस को कोई लाभ न होगा।" इसी तरह है कि जिस तरह डाक्टर से नुस्ख़ा लेकर उस को प्रयोग न करो और कहो कि मैं ठीक नहीं हुआ यही हालत रूहानी मरीज़ों की है अगर बातें सुनकर अनुकरण नहीं करोगे तो कोई लाभ न होगा। फरमाया "हरगिज़ लाभ न होगा क्योंकि लाभ तो उस पर लिखे हुए नुस्ख़ा पर अनुकरण के कारण होगा जिस से वह ख़ुद वंचित है।" फरमाया कि "कश्ती नूह का बार बार अध्ययन करो और उस के अनुसार अपने आप का बनाने के कोशिश करो قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (अश्शमस 10)निस्संदेह वह सफल हो गया जिस ने अपने नफ़्स को पवित्र किया।" फरमाया "यूं तो हज़ारों चोर ज़ना करने वाले, शराबी बदमाश आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत होने का दावा करते हैं परन्तु क्या वे वास्तव में इस प्रकार हैं। हरगिज़ नहीं। उम्मती वही है जो आप की शिक्षाओं पर पूरा अनुकरण करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर इस "कश्ती नूह" को जमाअतों में पढ़ कर सुनाने और पढ़ने की तरफ ध्यान दिलाने की तरफ ध्यान दिलाने की तरफ आप फरमाते हैं कि "कश्ती नूह में मैंने अपनी शिक्षा लिख दी है और इस से प्रत्येक आदमी को परिचित होना चाहिए। तथा प्रत्येक शहर की जमाअत जलसा कर के इस शिक्षा को सुना दे। एक काम करने वाले आदमी को भेज दिया जाए जो पढ़ कर सुना दे और अगर इसी तरह बांटने लगे तो चाहे पचास हज़ार हो काफी नहीं हो सकती। इस तरकीब से इस का प्रकाशन भी हो जाएगा और एकता जो हम जमाअत में चाहते हैं जमाअत में पैदा हो जाएगी।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 408 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए इसके पढ़ने और सुनाने का जमाअतों में जहां प्रबंधन होना चाहिए और इसी तरह एम.टी ए में भी पढ़ने का प्रबंध होना चाहिए। प्रत्येक को इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। ख़ुद भी पढ़ना चाहिए और इसका पालन करने का प्रयास करना चाहिए।

बुराइयों से बचने की हिदायत और वास्तविक अहमदी की निशानी बताते हुए आप फ़रमाते हैं कि

"तुम्हारा काम अब यह होना चाहिए कि दुआओं और इस्तिग़फार और अल्लाह तआला की इबादत और नफ़्स की पवित्रता में संलग्न हो जाओ। इसी तरह अपने आप को इस योग्य बनाओ कि ख़ुदा तआला की नेअमतों और उपकारों का जिस का उस ने वादा फरमाया है। यद्यपि ख़ुदा तआला के मेरे साथ बहुत बड़े-बड़े वादे हैं और भविष्यवाणियां हैं जिन के बारे में विश्वास है कि अवश्य पूरी होंगी परन्तु तुम उन पर गर्व न करो। हर प्रकार की ईर्ष्या, वैर, द्वेष, ग़ीबत और गर्व तथा निरर्थक दुराचार तथा और कदाचार के ज़ाहरी और बातनी मार्गों और सुस्ती और लापरवाही से बचो। खूब याद रखो कि अंजाम हमेशा मुत्तकियों का ही हमेशा अच्छा होता है जैसे अल्लाह तआला फरमाता है وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ (अन्जाम मुत्तकियों की ही अच्छा है।) "इस लिए मुत्तकी बनने की चिन्ता करो"

अल्लाह तआला हमें वास्तविक अहमदी बनने और आप की शिक्षाओं पर चलने की तौफीक़ प्रदान फरमाए। ख़ुदा तआला का हक अदा करने वाले भी हों और उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करने वाले भी हों। अपना व्यावहारिक सुधार करने वाले भी हों अपने ज्ञान में वृद्धि करने वाले भी हों और अल्लाह तआला के बन्दों के अधिकार अदा करने वाले भी हों।

इन दिनों में विशेष रूप से पहले भी मैंने इशारा किया है पाकिस्तान की हालत के बारे में दुआ करें और पाकिस्तानियों को ख़ुद अपने बारे में और अपने लिए बहुत दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उन्हें भी हर बुराई से सुरक्षित रखे। दोबारा मौलवियों के कारण सामान्य रूप में देश के अंदर भी जो फसाद बरपा हो गया है अल्लाह उनकी बुराई से देश को भी सुरक्षित रखे। आमतौर पर दुनिया के लिए भी दुआ करें बड़ी तेज़ी से यह अब यह युद्ध की ओर बढ़ रहे हैं। रूस और अमेरिका दोनों तैयारियों में व्यस्त हैं और वास्तव में तो ये अपनी श्रेष्ठता साबित करना चाहते हैं और नाम है कि हम मज़लूमों का अधिकार दिलवाना चाहते हैं। वास्तव में तो यह पीड़ितों का हक दिलवाने के नाम पर जिन में मुसलमान राष्ट्र शामिल हैं मुस्लिम देशों को तबाह करना चाहते हैं। अत: अल्लाह तआला मुसलमानों को भी बुद्धि दे और ये उन लोगों से मदद पाने के बजाय ख़ुद फैसला करने वाले हों अपने लोगों के अधिकारों को अदा करने वाले हों। जनता अपनी सरकार के हक़ अदा करने वाली हो और यह आतंकवादी समूह जो इस्लाम के नाम पर हरकतें कर रहे हैं अल्लाह उनकी भी पकड़ कर और दोनों पक्षों को बुद्धि और समझ दे और सबसे बढ़कर यह कि यह युग के इमाम को मानने वाले हों क्योंकि इसके बिना अब कोई और चारा नहीं कि यह बच सकेंगे या इन का किसी भी मामले में जीवन है। अल्लाह तआला उन्हें अक्ल दे और इन मुसलमान ज़ुल्मों का हिस्सा बनने के बजाय इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं के अनुसार प्यार और भाईचारा की शिक्षा को फैलाने वाले हों और अल्लाह तआला का हक अदा करने वालें हों।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

जमाअत के प्रयासों में बरकत डाले।

Dr Ernest Bai Koroma

President of the Republic of Sierra Leone

प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात के दौरान राष्ट्रपति सिएरा लियोन ने फोन के माध्यम से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से बातचीत की और जलसा सालाना के सफल आयोजन पर बधाई दी और नेक इच्छाएं व्यक्त कीं और अपने देश के लिए दुआ का निवेदन किया।

* एक मेहमान जर्नलिस्ट अल्हाज अल्फा बंगोरा साहिब ने जलसा के हवाले से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा हज़रत अमीरुल मोमेनीन को मैंने पहली बार देखा और यह बहुत ही अजीब इहसास था। मैं अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सका जलसा में जो नियन्त्रण और समर्पण का नमूना देखने को मिला वह बहुत अदभुत था। फिर जामिया का माहौल बहुत ही शानदार था। जमिया जाने के बाद तो किसी भी होटल में जाने को जी नहीं चाहता। अब मुझे खेद हो रहा है कि मैंने पहले क्यों इस जलसा में भाग नहीं लिया ।

* अलहसन बी कुमारा साहिब सिएरा लियोन में एक कस्टम अधिकारी है वह पहले साल जलसा में शामिल हुए थे। वह कहते हैं: मुझे अपनी नौकरी और परिवार को छोड़ना बहुत कठिन था। लेकिन यहां आकर मुझे पता चला कि मेरा यहाँ आने का फैसला सही था। यहां आकर मुझे इस्लाम की वास्तविक तस्वीर देखने को मिली और हर मुसलमान के लिए आवश्यक है कि वे इस्लाम का असल चेहरा देखे। इमाम जमाअत अहमदिया को लोगों के साथ मिलता देख कर केवल एक ही बात मन में आती है कि यह आदमी मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी ने नहीं की वास्तविक तस्वीर है।

*सिएरा लियोन के पैरामाउंट चीफ साफ़ा मूंग टामो ने अपने भाव का प्रकट करते हुए कहा अहमदियत ने सभी देशों से विभिन्न जातियों और भाषाओं के लोगों को एक जगह इकट्ठा करके यह साबित कर दिया है कि जमाअत अहमदिया हर प्रकार के भेदभाव से मुक्त है। जब मैंने पहली बार ख़लीफतुल मसीह को देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह व्यक्ति वास्तव में शांति का चैंपियन है और शांति स्थापित करने के लिए तैयार है मैं चाहूंगा कि बार बार इस जलसा में शामिल हूं।

* पैरामाउंट चीफ आफ सियरा लियोन के अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा, पहली बार मुझे जलसा में शामिल होने का अवसर मिला। मुझे पहले भी जलसा सालाना में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन समय की कमी के कारण इसमें शामिल नहीं हो सका। लेकिन यहां, मुझे जलसा सालाना के माहौल को देख कर बहुत इहसास हुआ है कि मुझे जलसा सालाना में बहुत पहले भाग लेना चाहिए था। जलसा के माहौल में नियन्त्रण और नैतिकता सब से अधिक दिखाई देती है। हर कोई एक दूसरे को नस्लीय मतभेदों के बिना सलाम करता है। ख़लीफतुल मसीह को देख कर लगता है कि ख़ुदा तआला ने उन्हें विशेष क्षमता प्रदान की है घंटों भाषण देने के बावजूद भी, उनके चेहरे पर चमक देख कर आश्चर्य होता है।

* सिएरा लियोन के एक मेहमान अब्दुल कअबा कोर गोबे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मैं जलसा सालाना की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हूं। अगर मैं यहाँ नहीं आता और कोई मुझे बताता है कि 37,000 से अधिक लोगों ने तीन दिनों के लिए एक स्थान पर एक साथ इकट्ठा हुए हैं और इसमें किसी प्रकार की कोई ग़लतफ़हमी नहीं हुई है, शायद मैं इसमें विश्वास नहीं करूंगा। लेकिन ये सारी चीज़ें मेरी आँखों से देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित हुआ हूं कि मैंने किसी को शिकायत करते नहीं दिखाई। सभी लोग बहुत विनम्रता से सेवा कर रहे हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह का व्यक्तित्व एक अलग स्थान रखता है, और इसके बावजूद मैंने ख़लीफतुल मसीह को हमेशा विनम्रता व्यक्त करते हुए देखा है। मेरी सिएरा लियोन की वापसी की सीट थी लेकिन जब मुझे पता चला कि मेरी ख़लीफतुल मसीह के साथ मुलाकात भी हो सकती है तो मैंने अपनी उड़ान आगे करवा ली क्योंकि यह जीवन प्रदत अवसर बर्बाद नहीं करना चाहता था।

* सिएरा लियोन के एक अन्य संसद Sallieu Osmas Sesay सदस्य भी जलसा में शामिल हुए अपने भावों में उन्होंने कहा कि कहा: मैं पहली बार जलसा में शामिल हुआ हूं। पहले मैं सोचता था कि अहमदयित कुफ्र का दूसरा नाम है और वे लोगों के Brain Wash कर देते हैं। लेकिन इस जलसा में शामिल होने के बाद, मेरी अहमदियत के बारे में राय पूरी तरह बदल गई है। ख़लीफतुल मसीह के व्यक्तित्व के भीतर पाई जाने वाली नम्रता और विनय अद्वितीय है। लोग उन्हें जितना प्यार करते हैं, और जितनी इज्ज़त देते हैं अगर ख़लीफतुल मसीह चाहें तो लंदल के महंगे इलाका में रह सकते हैं, लेकिन वे एक छोटे से क्षेत्र और एक छोटी सी इमारत में रहते हैं। ख़लीफतुल मसीह के साथ मिल कर, मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वे सब कुछ कर सकते हैं।

संसदीय परिषद सिएरा लियोन के एक अन्य सदस्य, Alie Kaloko भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: अहमदियत ही इस्लाम की वास्तविक तस्वीर है। शांति को बढ़ावा देने के लिए अहमदी मुसलमानों के प्रयास प्रशंसा योग्य हैं। आज, इस्लाम का नाम आतंकवाद के साथ जोड़ा जाता है, लेकिन अहमदी इस धारणा को भूल साबित कर रहे हैं। जलसा की व्यवस्था बहुत अद्भुत थी। छोटे छोटे बच्चे भी लोगों की सेवा पर मामूर थे। यह दृश्य ईमान वर्धक था और मेरे दिल में जमाअत अहमदिया की सच्चाई प्रमाणित करने का लिए पर्याप्त है।

सिएरो लियोन के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात 1 बज कर 15 मिन्ट तक जारी रही। मुलाकात के अन्त में वफद के मेम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

मेडागास्कर के वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे गए और मेडागास्कर से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

* मेडागास्कर से एक भूतपूर्व मिन्सटर पोलीस Rakontondrazaka Arsena साहिब आए थे। महोदय का 2014 ई से जमाअत के साथ घनिष्ठ संबंध है और कई तरह से इसके समर्थक और समर्थन करने वाले रहे हैं। महोदय ने कहा कि मैं यहां आकर बहुत ख़ुश हूं। मेडागास्कर में मुझे जमाअत अहमदिया के कार्यक्रमों में शामिल होने का अवसर मिला। मैंने राष्ट्रीय पुलिस के अवस्था में जमाअत की गतिविधियों को देखा है। जमाअत अहमदिया अन्य मुसलमानों से एक अलग संप्रदाय है और शांतिपूर्ण है। जमाअत कोई कठिनाई पैदा नहीं करती। मुहब्बत प्यार और भाई चारा से रहते हैं और इसी की शिक्षा भी देते हैं। दूसरों के लिए आसानी पैदा करते हैं। मेडागास्कर में जमाअत अहमदिया विभिन्न क्षेत्रों में सेवा कर रही है। ह्यूमेन्टी फर्सट के अधीन आंखों के ऑपरेशन किए गए हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मानवता की सहायता और सेवा करना हमारा कर्तव्य है। आप का धन्यवाद कि

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

आपने विभिन्न अवसरों पर जमाअत की मदद की और काम करने के अवसर पैदा किए।

जलसा के बारे में महोदय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मुझे आश्चर्य है कि सारी दुनिया से 30 हज़ार से अधिक लोग आए हैं और कोई समस्या नहीं है और कोई परेशानी नहीं है। यह दुनिया में प्रेम और भाईचारा का एकमात्र उदाहरण है जिसे मैंने यहां देखा है। दुनिया भर से अलग-अलग राष्ट्रों और जातियों के लोग हैं, लेकिन सब एक नेतृत्व के इशारा पर चलते हैं। इस बात ने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। मुझे लगता है कि यही एक धर्म और जमाअत है जिस की ख़ुदा तआला सहायता कर रहा है और मुझे विशावास है कि सारी दुनिया आप को स्वीकार कर लेगी और अन्त में आप ही विजयी पाऐंगे।

देश की स्थिति के बारे में महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पूछने पर कहा कि काफी समय की समस्याओं के बाद अब देश की स्थिति सुधरने लगी है। महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को मेडागास्कर आने की दावत दी जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि अगर देश की पॉलिटिकल Stable है तो आने में कोई हर्ज नहीं है।

मेडागास्कर के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 1:00 बज कर 25 मिनट पर समाप्त हुई। अंत में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने की तौफीक मिली।

लाइबेरिया के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद, लाइबेरिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का श्रेय पाया।

* लाइबेरिया से आने वाले एक प्रतिनिधिमंडल में एक मेहमान Hon Senator Jonathan Lambert Kaipay शामिल थे। महोदय ने लाइबेरिया में अगामी होने वाले चुनावों के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ का निवेदन किया। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला करे कि चुनाव ठीक हों। महोदय ने अपने भाव वर्णन करते हुए कहा कि जलसा सालना ब्रिटेन का आयोजन करने और मुझे भाग लेने का मौका देने का मैं बहुत आभारी हूं। मैं जलसा के अधिकारियों और काम करने वालों की श्रद्धा को देख कर बहुत ही प्रभावित हुआ हूं। मैं ईसाइ होने के नाते ख़ुदा से मुहब्बत करने के बहुत से अनुभव और तरीके का गवाह हूं लेकिन आप का ख़ुदा तआला से प्यार करने और ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को पाने का तरीका मेरे लिए आश्चर्यजनक था और उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। दुनिया के अहमदियों को मेरी तरफ से नेक इच्छाओं का प्रकटन है और मैं उन लोगों के लिए दुआ करता हूं।

मुलाकात के अंत में, महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ एक तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाकात के अन्त में महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। लाइबेरिया के प्रतिनिधिमंडल की यह मुलाकात 1:00 बज कर 33 मिन्ट तक जारी रही।

कैमरून के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

फिर कैमरून के देश के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

* कैमरून से इस साल जलसा सालना यू के पर आने वाले वफद में एक पत्रकार मुहम्मद अज़ीज़ साहिब शामिल थे। महोदय ने जलसा सालाना के बारे में अपनी भावानओं को प्रकटन करते हुए कहा

इस प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस मैंने अपने जीवन में नहीं देखी जहां दुनिया के प्रत्येक कोने से लोग शामिल हो रहे हैं। जलसा के प्रबन्ध ने मुझे हैरान किया। प्रत्येक सेवक अपनी ड्यूटी मुस्कराते हुए बिना किसी ग़ुस्सा और लड़ाई के अदा कर रहा था। यह भी मेरे लिए हैरान करने वाली बात थी कि सैंकड़ों सेवक बिना किसी वेतन के दिन रात काम करते हैं।

जलसा की तकरीर वास्तव में दुनिया की वर्तमान स्थिति के अनुसार थीं। इन तकरीरों ने मेरे ज्ञान में बहुत वृद्धि की है। विशेष रूप से इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब बहुत प्रमुख थे। ये ख़िताब दुनिया के हालात को बदलने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनका महिलाओं के साथ संबोधन भी बहुत महत्त्वपूर्ण था यदि घरों से बच्चों का प्रशिक्षण अच्छा हो तो दुनिया का भविष्य भई बेहतर होगा अन्यथा हमारे बच्चे आतंकवाद के हाथों में चले जाएंगे। हमें इमाम जमाअत अहमदिया की प्रत्येक नसीहत का पालन करना होगा, फिर हम दुनिया में एक अच्छा माहौल और शांति पैदा कर सकते हैं।

यह मुलाकात 1 बज कर 40 मिनट तक जारी रही। अंत में,महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

होंडरस के प्रतिनिधिमंडल के साथ हुज़ूर अनवर की मुलाकात,

उसके बाद देश होंडरस से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का श्रेय पाया। होंडरस से 5 व्यक्तियों का प्रतिनिधि मण्डल आया था। जिन में तीन निम्नलिखित नए बैअत करने वाले भी शामिल थे

* Nelson Rafael Nunez नेल्सन राफेल नूनज़ होंडरस देश के पहले अहमदी हैं।

* Maurillo Osorio Persy डैनियल साहिब, महोदय अपने देश के प्रारम्भिक अहमदियों में से हैं यह अपने शहर के पहले अहमदी हैं।

* Blanca Lidia Antunez Flores साहिबा होंडरस की पहली अहमदी महिला हैं।

इन सभी नई बैअत करने वालों ने जलसा सालाना में शामिल हो कर बहुत ख़ुशी और नेक भावनाओं को व्यक्त किया और कहा कि यह हमारे जीवन में पहला अवसर है कि हमने इतने सारे विभिन्न क़ौमों के लोगों को एक स्थान पर देखा है और वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपने यहां देखा लिया है कि इस्लाम की शिक्षा कितनी शांतिपूर्ण है। अब आप यहां आ कर रिचार्ज हो चुके हैं। आब आप ने वापस जा कर इस्लाम का संदेश दूसरों को पहुंचाना है ।

* Blanca Lidia Antunez Flores ब्लैंका लिडिआ एंटिनेज़ फ्लोरस साहिबा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा पर खाना पकाने की व्यवस्था बहुत अच्छी थी और मैं महसूस कर रही था कि मैं घर पर हूं। हुज़ूर अनवर के भाषण बहुत पसंद आए। विशेष रूप से, हुज़ूर के ख़िताब, जिस में आपने महिलाओं के प्रति कहा, जिसमें आपने महिलाओं की जिम्मेदारियों और बच्चों के प्रशिक्षण और प्रोत्साहन के बारे में नसीहत फरमाई है। बैअत की घटना को देख कर बहुत प्रभावित हुई कि सभी लोग किस प्रकार एकजुट हैं और एक साथ हैं। मैंने अपने जीवन में इस तरह का नज़ारा कभी नहीं देखा है। हुज़ूर अनवर के लिए लोगों को प्यार और सम्मान का नमूना उच्च स्थान रखता है। इसी तरह, लोगों के मध्य प्यार और उत्कृष्टता भी दृश्यमान थी। मुझे याद है कि एक दिन एक महिला ने रात के खाने में मछली खाने की इच्छा व्यक्त की थी तो अगले दिन ही रात के खाने में मछली मिली थी। इस से मुझे पता चला कि जमाअत को मेहमानों की पूरी जानकारी है। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि हुज़ूर के साथ मुलाकात का अवसर प्राप्त हुआ। मुलाकात से पहले मैं बहुत घबराई हुई थी। लेकिन जब मैंने कमरे में प्रवेश किया, तो हुज़ूर ने मुझे बैठने को कहा। इस पर मेरी सारी घबराहट जाती रही। और मुझे सन्तोष पहुंचा। क्योंकि मुझे हुज़ूर अनवर की दया साफ नज़र आ रही थी। मुलाकात के बाद मुझे सन्तोष प्राप्त हुआ। मैं दुआ करती हूं और मेरी इच्छा है कि अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती वाली लम्बी आयु प्रदान करे। यह पूरा अनुभव मेरे लिए हैरान करने वाला और विशेष स्थान रखता है।

होंडोरस के इस वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात 1 बज कर 55 मिन्ट तक जारी रही। मुलाकात के अन्त में वफाद के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

ग्याना के वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद ग्याना से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। ग्याना से 5 व्यक्तियों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल आया था। इस प्रतिनिधिमंडल में एक पंडित Deodatt Muridall Tillack साहिब भी शामिल थे और एक पत्रकार सुश्री बीबी शहनाज खान साहिबा थीं।

*मेहमानों ने अर्ज किया कि हम जलसा की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हुए हैं। इतनी बड़ी संख्या जलसा में शामिल हुई लेकिन सब काम बड़ी अच्छी तरह जारी रहे। और कहीं भी कोई ख़राबी पैदा नहीं हुई। इस बात ने हमें बहुत हैरान किया। यह बातें जमाअत अहमदिया के अतिरिक्त कहीं और दिखाई नहीं देतीं।

*पंडित Deodatt Muridall साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मैं जमाअत अहमदिया के माटो "मुहब्बत सब के लिए, नफरत किसी से नहीं"

का प्रतिनिधित्व करना गौरव समझता हों। सब से महत्त्वपूर्ण बात जो मैं आपको बताना चाहता हूँ वह यह है बैअत के नियमों की नौवीं शर्त मेरे दिल की आवाज़ है और मैं इस शर्त पर अधिक प्रतिबद्ध रहने की कोशिश करूंगा क्योंकि जलसा सालाना का आतिथ्य इसी शर्त का परिणाम है। मैं प्रार्थना करता हूं कि अल्लाह तआला अपनी सुरक्षा और आशीर्वाद हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी और आप की जमाअत पर करे। जमाअत अहमदिया ख़ुदा तआला की बरकतों से दिन प्रतिदिन तरक्की करे। और ख़ुदा तआला आप का मार्ग दर्शन फरमाता रहे और आप की सुरक्षा करे।

पत्रकार शाहनाज़ खान साहिबा ने अपने विचार व्यक्त किए और कहा: जलसा सालाना बहुत शानदार था। मैंने इतनी बड़ी संख्या में मुसलमानों को एक साथ और एकजुट नहीं देखा है। बैअत का विचार अद्भुत था, लोग एक नई शक्ति प्राप्त कर रहे थे और ख़ुदा तआला से सानिध्य प्राप्त कर रहे थे। हुज़ूर अनवर के भाषण बहुत प्रभावशाली थे। आवास भोजन आदि बहुत शानदार था। तिलावत की आवाज़ सुन कर मुझे मेरे दादा की याद आ गई। बहुत अच्छी व्यवस्था थी। छोटे छोटे बच्चों को भी काम करते देख कर बहुत ख़ुशी हुई।

ग्याना के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 2:00 बज कर 5 मिनट तक जारी रही। मुलाकात के बाद प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

पांच अफ्रीकी देशों से आने वाले नेशनल टीवी चैनलों के निदेशक, प्रतिनिधियों और पत्रकारों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

*इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार उन्हें एम.टी.ए अफ्रीका के अधीन पांच अफ्रीकी देश गाना, जाम्बिया, सिएरा लियोन, रवांडा और बेनिन से विभिन्न सरकारी राष्ट्रीय टीवी चैनलों के निदेशक, प्रतिनिधियों और पत्रकारों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निदेशकों और प्रतिनिधियों की कुल संख्या 13 थी। इन प्रतिनिधियों ने यहां से जलसा सालाना की कवरेज अपने अपने देशों के लिए की थी।

इन प्रतिनिधियों से मुलाकात 2 बज कर 15 मिनट तक जारी रही। अंत में सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल पधार कर लाकर नमाज़े ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने घर पधारे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बच्चे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के दोस्तों और परिवारों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुई। आज, 46 परिवार के 230 सदस्यों और इस के अतिरिक्त 24 अन्य लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस तरह समग्र रूप से 254 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाले ये परिवार निम्न 21 देशों से आए थे।

पाकिस्तान, अमेरिका, बुर्किना फासो, कनाडा, सऊदी अरब, ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, नॉर्वे, दुबई, नाइजीरिया, अबू धाबी, यू.के., भारत, शारजाह, मॉरीशस, नीदरलैंड, लाइबेरिया, चीन, मलेशिया, स्वीडन, इटली, बांग्लादेश।

उनमें से हर एक ने अपने प्रिय आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए। और छोटी उम्र के बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट दीं।

मुलाकातों का यह शाम पौने नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में पधार कर नमाज़ मग़रिब और इशा पढ़ाईं। नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे।

2 अगस्त 2017 (दिन बुधवार)

आज कार्यक्रम के अनुसार बेनिन, आइवरी कोस्ट, मॉरीशस, किरबाती, मार्शल आइलैंड, माइक्रोनेशिया, मोरक्को, ग्वाटेमाला, गिनी कनाकरी, मेक्सिको, तुर्कमेनिस्तान, कज़ाकिस्तान और नाइजीरिया से आने वाले दलों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का प्रोग्राम था।

इसके अलावा विभिन्न देशों से आने वाले इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के पत्रकारों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से प्रेस सम्मेलन का भी कार्यक्रम था।

* मुलाकातों का यह प्रोग्राम सुबह 10:30 बजे सुबह शुरू हुआ। सब से पहले बेनिन से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

बेनिन के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर के साथ मुलाकात

बेनिन से इस वर्ष तीन प्रतिनिधि आए थे। जिस में मरयम बोनी जियालू साहिबा, पूर्व विदेश मंत्री और सलाहकार राष्ट्रपति, और इस समय एक वरिष्ठ मंत्री के सलाहकार हैं, शामिल थीं। इसी तरह, बेनिन के राष्ट्रीय टी. वी. के निदेशक कैट्री जेमिमा साहिबा भी प्रतिनिधिमंडल में मौजूद थीं।

* महोदया मरयम बोनी जियालू साहिबा ने कहा कि यहां दुनिया के 115 देशों के प्रतिनिधि इकट्ठा हुए हैं और 30 हज़ार से अधिक लोग जलसा में उपस्थित थे। लेकिन इस माहौल में किसी तरह के संघर्ष और झगड़े के बिना रहना यह एक अनोखी बात थी। इस प्रकार का शांतिपूर्ण प्रेम और भाईचारा की पर्यावरण हम ने पहले कभी नहीं देखा है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने राष्ट्रीय टेलीविजन के निदेशक से मुखातिब होते हुए कहा कि: न्यूज़ मीडिया ने जलसा सालाना की बड़ी अच्छी कवरेज की है। यहां के राष्ट्रीय समाचार पत्रों और दुनिया के बड़े समाचार पत्रों ने भी कवरेज की है, तो बेनिन क्यों पीछे रह गया।? इस पर महोदया ने कहा कि बेनिन में भी कवरेज होगी हम एम.टी.ए इंटरनेशनल और बेनिन टीवी के बीच समन्वय करना चाहते हैं। महोदया ने कहा कि राष्ट्रपति ने उन्हें यहां भेजा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया,आपके आगमन के लिए धन्यवाद और राष्ट्रपति को भई धन्यवाद। महोदय ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के भाषणों से बहुत प्रभावित हुई हूँ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का सन्देश दुनिया अगर समझ ले तो दुनिया से भ्रष्टाचार समाप्त हो जाए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया पहले अपने देश में तो लोगों को समझाएं। औरतें बच्चे और जवान बूढ़े सब मानवता की सेवा के लिए वक़्फ़ हैं। केवल बेनिन में ही नहीं, इस संदेश को सभी अफ्रीकी देशों में फैलाए। कम से कम फ्रैंको फोन देशों में तो इस की व्यापक कवरेज हो।

* कुछ अफ्रीकी देशों में बोको हराम की तरफ से आतंकवादी घटनाएं हो रही हैं। महोदया ने इस बारे में बताया कि अब पड़ोसी देश बुर्किना फासो में आतंकवादी घटना हुई है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, माली देश में भी इस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं। आपको अपने आप को बचाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से महिलाओं के भाषण के हवाले से निवेदन किया

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के इस संबोधन ने बहुत प्रभावित किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, महिलाओं शिक्षिका हैं। देश तथा क़ौम की तय्यार करने वाली हैं। भविष्य में आने वाली नस्लों की ज़िम्मेदार हैं। महोदया ने कहा कि हमें यहां तो महिलाओं को अधिकार नहीं दिया जाता। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, हम तो यह चाहते हैं कि महिलाएं अलग हो कर अपने कार्यक्रम बनाएं और आगे बढ़ें।

*महोदय मरयम बोनी जियालू साहिबा जो पूर्व विदेश मंत्री और सहायक राष्ट्रपति और वर्तमान वरिष्ठ मंत्री सलाहकार हैं, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे इस जलसा के माध्यम से जमाअत अहमदिया को गहराई से समझने का मौका मिला। मैं जलसा के प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हूं। कार्यकर्ताओं का काम का स्तर बहुत ऊंचा था। सेवा करने वालों की ईमानदारी को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ मैंने प्रशासनिक रूप में हर तरह से समीक्षा की लेकिन इतने बड़े जलसे में कोई त्रुटि नजर नहीं आई । हर विभाग को महत्त्वपूर्ण नज़र से देखा लेकिन हर विभाग में व्यवस्था मानक और उच्च थी। जब मैंने कार्यकर्ताओं की तरफ देखा तो महसूस करती कि क्या छोटे और बड़े, बूढ़े, युवा, पुरुष, महिलाएं, जीवन के हर वर्ग को लोग दूसरों को आराम देने के लिए तैय्यार रहते थे। हर कोई अपने आराम भुला कर दूसरों को आराम और सुविधा पहुंचाने के लिए तैयार था। उनके मुस्कुराते चेहरों को, जो अन्य मेहमानों की सेवा में ख़ुशी महसूस करते, मैं अपने जीवन में कभी भुला न पाऊंगी। यह हसीन यादें मेरे जीवन का हिस्सा रहेंगी। मेरी इच्छा है कि यह आदतें हमारे देश में भी कायम हूँ और जमाअत अहमदिया एक सीखने की अकादमी है जिस से मेरे देश के युवा भी शिक्षा प्राप्त करें। यदि आध्यात्मिक रूप में देखूँ तो हर तरफ एक भाईचारा का माहौल था जिस से आध्यात्मिकता में वृद्धि होती थी। या ऐसा माहौल था जिस का मैंने अपने जीवन में पहली बार परीक्षण किया था और शायद सभी मेहमानों ने पहली बार ऐसा माहौल देखा है। बैनिन में मैं जमाअत अहमदिया को जानती हूं और उस की लोगों की सेवा से भी परिचित थी परन्तु जमाअत का मूल दर्शन और शिक्षा तो केवल जलसा सालाना में शामिल होने के बाद समझने की तौफीक मिली है। इसलिए अब मैं कहती हूं कि वह इस्लाम जो अहमदियत प्रस्तुत करती है और वही दुनिया को शांति दे सकता है और दुनिया की समस्याओं का समाधान इसी में है। महोदय कहने लगीं ख़लीफतुल मसीह के भाषणों का मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा है। खासकर महिलाओं को संबोधित था उसने सोच पर गहरे छाप छोड़े हैं। बाकी मुसलमान समूहों के निकट महिला की स्थिति एक ग़ुलाम से अधिक नहीं है। लेकिन ख़लीफतुल मसीह ने महिलाओं के संबोधन में महिलाओं के शिक्षक करार दिया है और उसके कर्तव्यों में आने वाली नस्लों की तरबियत तथा प्रशिक्षण और शिक्षा को भी शामिल किया है, जो कि दुनिया का भविष्य है। अर्थात धर्म का भविष्य महिलाओं के हाथों में है यह महिलाओं को दिया गया एक बड़ा सम्मान है। अर्थात्, औरत को ख़ुदा ने एक सेहत मंद और अमन वाले परिवेश की स्थापना के लिए एक बहुत बड़ा काम दिया है।

बेनिन के राष्ट्रीय टी वी की निर्देशक Catray Jemima ने कहा: जमाअत अहमदिया के लोगों ने मुझे हमेशा भाईचारा और मिलनसारी से प्रभावित किया लेकिन यहाँ इस जलसा में शामिल होकर मुझे पता चला कि ऐसा क्यों है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जमाअत अहमदिया का प्रत्येक आदमी इस दर्शन को जानने वाला है और प्रत्येक अहमदी का जीवन इन्हीं सिद्धांतों से जुड़ा है।

बेनिन के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 10 बज कर 45 मिनट तक चली। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आइवरी कोस्ट के वफ्द की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद आइवरी कोस्ट से आने वाले प्रतिनिधिमंडल को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य मिला।

* आइवरी कोस्ट से एक मेहमान ज़रापा डोपू साहिब आए थे। महोदय आइवरी कोस्ट के शहर ज़ौआन-होवीन के मेयर हैं। महोदय ने बताया, कि मैंने पहली बार यहां जमाअत का जलसा सालाना देखा है। बहुत अच्छा जलसा था और एक महान आयोजन था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जंगल में एक शहर आबाद करके अस्थायी प्रावधान किया गया था। अस्थायी प्रबंधन में भी कुछ कमियां रह जाती हैं। महोदय ने कहा कि सभी व्यवस्थाएं अच्छी थीं। हजारों यात्रियों को समय पर परिवहन प्रदान किया जा रहा था। भोजन प्रबंधन बहुत ही संगठित था। एक ही समय में लोग खाना खाते थे। कोई ग़लत बात नहीं थी। हमारा बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा गया था जो कुछ भी ज़रूरत थी वह शीघ्र पूरी कर दी जाती। मैं स्वैच्छिक काम से बहुत प्रभावित हूँ।

* अमीर साहिब ने बताया कि मेयर ने अपने क्षेत्र में ख़ुद्दामुल अहमदिया के प्रशिक्षण कक्षा में 20 लोगों को भिजवाया था, जिस पर वहाँ के जोला इमाम ने उनका विरोध किया था कि लोगों को क्यों भेजा गया? उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा कि यहां आकर आप देख लिया है कि हम वास्तविक मुसलमान हैं और अहमदियत ही इस्लाम की वास्तविक तस्वीर है। अमीर साहिब आइवरी कोस्ट ने कहा कि यदि जमाअत इन के क्षेत्र में सामाजिक काम करती है तो यह उनके क्षेत्र के लिए बहुत अच्छा होगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम माडल विलेज बना सकते हैं इसकी समीक्षा की जा सकती है हमारे आर्किटेक्ट्स और इंजीनियर्स एसोसिएशन इसकी समीक्षा कर सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि ग़ाना से जो स्थानीय मिशनरी पढ़कर आए हैं, उनमें से एक को यहाँ उनके क्षेत्र में भिजवा दें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, शांति की स्थापना के लिए हम पूरा सहयोग करेंगे।

महोदय ने अपने विचार व्यक्त किए और कहा: मैंने जब इस्लाम, अहमदियत को स्वीकार किया तो लोगों में बहुत नकारात्मक बातें सुनने को मिलीं। मुझे इस्लाम के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए मैं इतनी चिंतित था कि मैं कैसे फैसला कर सकता हूं कि अहमदी मुस्लिम है या नहीं? मैंने सोचा था कि कहीं मैंने जमाअत में शामिल हो कर कोई गुनाह तो नहीं कर लिया। अत: जब मैंने जमाअत से संपर्क किया तो उन्होंने मुझे जलसा सालाना में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया कि मैं वहां जमाअत को देख लूं। जब मैं यहां आया तो मैंने इस्लाम की मूल तस्वीर देखी। इमाम जमाअत अहमदिया का प्रत्येक भाषण अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम से शुरू होता है और अल्लाह तआला और रसूल के नाम पर ही खत्म होता है। फिर जलसा के माहौल को देखने के बाद, मुझे अपने प्रश्नों का उत्तर मिला कि क्या अहमदी एक मुसलमान है या नहीं। मैं गर्व से कह सकता हूं कि जो काम मुझ से हुआ वह बिल्कुल सही था। अहमदी ही एक असली मुस्लिम है और मैं संतुष्ट हूं। अहमदियों की सभी गतिविधियां कुरआन और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों के अनुसार हैं। अब मैं वापस जाकर लोगों को इमाम जमाअत अहमदिया के बारे में बताऊंगा।

आइवरी कोस्ट के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 11 बजे तक जारी रही। अंत में महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का श्रेय पाया।

मॉरीशस के वफ्द की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ महमूद हॉल में पधारे, जहां मॉरीशस से आने वाले दोस्तों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। इस साल मारीशस से एक सौ से अधिक लोग इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों से जलसा सालाना के बारे में पूछा: सदस्यों ने बताया कि यह जलसा सालाना हमारे लिए बहुत मुबारक था। जलसा की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। जलसा के दौरान बारिश हुई थी, लेकिन बारिश ने भी किसी भी व्यवस्था कोई नहीं रोक नहीं पैदा की दिया। सभी काम जारी रहे। जलसा की व्यवस्था ने हमें बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के भाषण ने हमारे पर गहरा असर डाला है। हमारे विश्वास और आध्यात्मिकता में वृद्धि हुई है। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने स्वयं और उनके परिवारों और बच्चों के लिए दुआ का अनुरोध किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने बच्चों को चाकलेट प्रदान कीं। प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने परिवार सहित हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का श्रेय भी पाया।

किरबाती, मार्शल आइलैंड और माइक्रोनेशिया के दलों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे आए, जहां पर कार्यक्रम के अनुसार किरबाती, मार्शल आइलैंड

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 17 May 2018 Issue No. 20

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और माइक्रोनेशिया से आने वाले प्रतिनिधियों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया ।

* किरबाती से दो सदस्यों के पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल आया था जिनमें एक वहाँ के सदर जमाअत अबू बकर साहिब और एक मेहमान Teiraui Tebiria साहिब थे, जो कि वहाँ के पूर्व सांसद और मिनिस्टर आफ़ श्रम और मिनिस्टर ऑफ एजुकेशन हैं, शामिल थे।

*जबकि मार्शल आइलैंड से वहाँ के मुबल्लिग़ सिलसिला फिरोज़ अहमद हिन्दल साहिब और राष्ट्रीय सचिव माल John Nena साहिब शामिल थे।

*माईक्रोनियशिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडल में वहां के मुबल्लिग़ सिलसिला एहतेशाम उल महमूद कौसर साहिब और राज्य सीनेटर माननीय Edmond Ronson H शामिल थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन मेहमानों ने से जलसा सालाना के बारे में पूछा।

इन मेहमानों ने बताया कि जलसा सालाना के दौरान विभिन्न देशों के लोग एक साथ इकट्ठा थे। सभी के लिए महान व्यवस्था थी। बड़ा आरगनाईज़ जलसा था और जो काम करने वाले युवा, बच्चे, बूढ़े थे वे सब बड़ी ख़ुशी से बिना थके काम कर रहे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपने देखा है कि विभिन्न देशों के विभिन्न राष्ट्रों, क़ौमों के लोग यहां बहुत शान्ति से रह रहे थे। मैं दुआ करता हूं कि आपके देशों में भी इसी प्रकार का अमन स्थापित हो जाए और अनुशासन स्थापित रहे ।

* माईक्रोनियशिया से आने वाले मेहमान रोनसन साहिब ने वहां जमाअत के पंजीकरण के बारे में बात की। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: आप जमाअत के पंजीकरण के विषय में पूर्व सांसद और सीनेटर होने की दृष्टि से काम करे। महोदय ने जलसा सालाना के बारे में अपने भाव का प्रकट करते हुए कहा: इतने सारे लोग volunteer कर रहे थे और उनमें बड़े और छोटे, सब लोग दिल लगा कर और प्यार के साथ काम कर रहे थे। और यह भी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात थी कि हम में से जो अब तक मुसलमान नहीं हैं उन लोगों के साथ भी बहुत अच्छा व्यवहार किया। वैश्विक बैअत का दृश्य भी बहुत आध्यात्मिक था हालांकि मैं एक ईसाई हूँ, फिर भी मैं इसमें शामिल हुआ और इस में मुझे एक अद्‌भुत आध्यात्मिक अवस्था महसूस हुई।

*किरबाती से आने वाले मेहमान Teraoi Tebiria साहिब जो पूर्व महापौर, पूर्व शिक्षा मंत्री विभाग किरबाती, पूर्व मंत्री श्रम किरबाती और पूर्व सदस्य संसद किरबाती हैं ने जलसा के संबंध में अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: इसमें कोई शक नहीं कि एक दिन पूरा विश्व इस जमाअत में शामिल हो जाएगा क्योंकि आज जिस शांति की मांग विश्व कर रहा है, इस जलसा में स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है। विभिन्न देशों का इस तरह एक स्थान पर इकट्ठा होना यह साबित करता है कि यही शांति है इसलिए मुझे विश्वास है कि दुनिया इस जमाअत में जल्द शामिल हो जाएगी। जब जलसा में पहुंचा तो मैंने देखा कि सफाई के मामले में जमाअत की गुणवत्ता बहुत ही उच्च है। जिस बात ने मुझे आश्चर्य में किया हुआ है वह यह थी कि यह किस प्रकार के लोग हैं जिनके पास उच्च शान की नौकरियां और दुनिया का पैसा होने के बावजूद बाथरूम की सफाई के लिए ऐसे काम करते हैं जैसे यही काम उन्हें सबसे प्रिय है।

*मुबल्लिग़ सिलसिला जमाअत अहमदिया किरबाती ने उनके विषय में बताया आदरणीय Teraoi साहिब ने इस जलसा के दौरान ही अहमदियत में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त किया। वापसी पर अपने मुसलमान होने पर इतनी खुशी हुई कि अपने सारे परिवार को प्रचार करने में व्यस्त हो गए यहाँ तक कि जब काम की वजह से उन्हें दूसरे द्वीपों पर जाना पड़ा तो उधर भी प्रचार में व्यस्त रहे। जहां भी जाते अपना जलसा सालाना ब्रिटेन का BADGE पहनकर जाते ताकि लोग पूछ सकें कि यह क्या है और वह फिर जमाअत के विषय में कुछ न कुछ बता सकें और प्रचार कर सकें। अलहम्दो लिल्लाह।

*किरबाती के सदर जमाअत Angabeia Tataua साहिब ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा: मेरे लिए सबसे आश्चर्य वाली बात आलमी बैअत की थी जिस में हमारे प्यारे हुज़ूर जब हॉल में आए तो वह भी आकर धरती पर हमारे साथ ही बैठ गए। मुझे विश्वास नहीं था कि हमारे ख़लीफा, जिनका स्थान इतना ऊंचा है, फिर भी हमारे साथ ज़मीन पर बैठे हैं। सरकारी प्रतिनिधियों बल्कि धार्मिक प्रतिनिधियों को भी कभी धरती पर कभी बैठे नहीं देखा, लेकिन हमारे ख़लीफा जो इतने विनम्र हैं कि वह हमारे साथ ही ज़मीन पर बैठ गए। इस से मेरे ईमान में बहुत वृद्धि हुई है।

*मारशल आइलैंड से आने वाले मेहमान John Nena साहिब जो कि मार्शल आइलैंड में जमाअत के सचिव माल हैं, ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा: इस बात को शब्दों में बयान नहीं कर सकता जो मैंने ख़ुद अपनी आँखों से देखा। आमतौर पर यह माना जाता है कि मुसलमान मारते हैं, लेकिन ऐसा कुछ नहीं। सब लोग इतना प्यार दिखा रहे थे, इतने सारे लोग विभिन्न देशों से आए हुए, जिन्हें पहली बार मिला, लेकिन ऐसा अनुभव किसी से नहीं हुआ कि किसी से हम पहली बार मिल रहे हैं। मेरा घर निवास अहमदियों में था, और वहां मेरी छोटी से छोटी चीजों का भी ध्यान रखा गया। जब हम खाते तो हम सभी जलसा में शामिल एक साथ खाते हैं और इतना अच्छा महसूस करते हैं कि हम एक साथ खा रहे हैं। हम नमाज़ भी एक साथ पढ़ते, और मैंने सबको देखा, जामिया और जलसा गाह में भी कि कितने आराम से और कितने ध्यान से सब मित्र नमाज़ पढ़ते हैं। यह बात मुझे इतनी विशेष लगी और यह बात ख़ुद के लिए भी चाहता हूँ कि मैं भी अपनी नमाज़ को बेहतर तरीके से पढ़ूँ और मैं भी कोशिश करूं कि अपना अल्लाह तआला से संबंध बढ़ाऊं। फिर मुझे हुज़ूर अनवर से मुलाकात का अवसर मिला। मैंने मुरब्बी साहिब को बताया कि मैं मुलाकात के दौरान अमुक अमुक बात कहना चाहता हूँ, लेकिन जैसे ही मैंने कमरे में प्रवेश किया, मैं कुछ कह नहीं सका। यह मेरे जीवन में इतनी खास बात थी जब हुज़ूर के कार्यालय में प्रवेश किया, मेरे दिल में यही विचार आया कि इस दुनिया में और कोई ऐसा आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं। मैं भाग्यशाली था कि मुझे भी मेरे जीवन में यह अवसर मिला। मेरे पिता (सैम नीना Sam Nena) को भी बहुत साल पहले हुज़ूर अनवर मिलने को मिलने का मौका मिला था, तो मेरी भी इच्छा थी कि मैं भी मिलूं, और अल्लाह तआला ने ऐसा कर दिया कि मुझे इस साल यह मौका मिला। अहमदी लोग और मेहमान दुनिया भर से जुड़ गए थे, और सभी शांतिपूर्वक रह रहे थे। बारिश थी, लेकिन सभी काम करने वालों ने अच्छी तरह से किया। हमें लंदन को देखने का अवसर मिला। इस घटना के दौरान कई मेहमान मेरे दोस्त बन गए जिनके बारे में मैं हमेशा याद रखूंगा। हम उन लोगों को बताते कि हम मार्शल आई लैण्ड से हैं, और फिर उन्हें map दिखाया कि मार्शल आई लैण्ड के द्वीप कहां है, और वे हैरान होते कि इतनी दूर से हम आए और कहा कि वहाँ भी मुसलमान हैं।

जब हुज़ूर से मुलाकात की, तो मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था कि मैं एक ऐसे पवित्र व्यक्ति से मिलूंगा। जब मैंने हुज़ूर के हाथों को पकड़ा, तो मुझे लगा कि एक रूह मेरे अंदर आ गई और मुझे जगा दिया। मैं अल्लाह तआला का बेहद धन्यवाद करता हूँ कि मुझे यह मौका मिला और जमाअत का भी धन्यवाद अदा करता हूं कि उन्होंने मुझे इस जलसा में शामिल होने का अवसर प्रदान किया। महोदय ने कहा: हमें गर्व होना चाहिए कि हम मुसलमान हैं। हमें हमारी नमाज़ों में सुधार करना होगा। जलसा में शामिल होने के बाद, मैंने देखा कि लोग कैसे उनकी नमाज़ों को पढ़ते हैं और इस प्रकार नमाज़ पढ़ते हैं कि दुनिया की कोई चिन्ता ही नहीं। हमें हमारी नमाज़ों का ध्यान रखना चाहिए। हम सभी को एक दूसरे को याद दिलाना चाहिए।

इन तीन देशों के प्रतिनिधिमंडल कीहुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 11:30 बजे तक जारी रही। अंत में इन प्रतिनिधिमंडल ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(शेष....................)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad